पंचदश माला, खंड 1, अंक 3

बुधवार, 3 जून, 2009

13 ज्येष्ठ, 1931 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद

(हिन्दी संस्करण)

पहला सत्र

(पंद्रहवीं लोक सभा)

(खण्ड 1 में अंक 1 से 7 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय

नई दिल्ली

मूल्य : अस्सी रुपये

सम्पादक मण्डल

पी.डी.टी. आचारी
महासचिव
लोक सभा

डा. रविन्द्र कुमार चड्डा
संयुक्त सचिव

प्रतिमा श्रीवास्तव
निदेशक

कमला शर्मा
अपर निदेशक

सरिता नागपाल
संयुक्त निदेशक

अरूणा वशिष्ठ
सम्पादक

© 2009 लोक सभा सचिवालय

हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जाएगी। इसमें सम्मिलित मूलतः अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में दिए गए भाषणों का हिन्दी अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जाएगा। पूर्ण प्रामाणिक संस्करण के लिए कृपया लोक सभा वाद-विवाद का मूल संस्करण देखें।

लोक सभा सचिवालय की पूर्व स्वीकृति के बिना किसी भी सामग्री की न तो नकल की जाए और न ही पुनः प्रतिलिपि तैयार की जाए, साथ ही उसका वितरण, पुनः प्रकाशन, डाउनलोड, प्रदर्शन तथा किसी अन्य कार्य के लिए इस्तेमाल अथवा किसी अन्य रूप या साधन द्वारा प्रेषण न किया जाए, यह प्रतिबंध केवल इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोप्रति, रिकॉर्डिंग आदि तक ही सीमित नहीं है। तथापि इस सामग्री का केवल निजी, गैर वाणिज्यिक प्रयोग हेतु प्रदर्शन, नकल और वितरण किया जा सकता है बशर्ते कि सामग्री में किसी प्रकार का परिवर्तन न किया जाए और सभी प्रतिलिप्यधिकार (कॉपीराइट) तथा सामग्री में अन्तर्विष्ट अन्य स्वामित्व संबंधी सूचनायें सुरक्षित रहें।

विषय सूची

पंचदश माला, खंड 1, पहला सत्र, 2009/1931 (शक)
अंक 3, बुधवार, 3 जून, 2009/13 ज्येष्ठ, 1931 (शक)

विषय **कॉलम**

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण 1

अध्यक्ष का निर्वाचन 1-6

अध्यक्ष महोदय को बधाइयां 6

डा. मनमोहन सिंह 6-7

श्री प्रणब मुखर्जी 7-8

श्री लाल कृष्ण आडवाणी 8-9

श्री बसुदेव आचार्य 9-11

श्री मुलायम सिंह यादव 11-12

कुमारी ममता बनर्जी 12-13

श्री अर्जुन चरण सेठी 13-14

श्री टी.आर. बालू 14-15

श्री चंद्रकांत खैरे 15-16

डा. एम. तम्बिदुरई 16-17

श्री शरद पवार 17-18

श्री शरद यादव 18-20

श्री नामा नागेश्वर राव 20

श्री गुरूदास दासगुप्त 20-21

श्री लालू प्रसाद 21-24

डा. रतन सिंह अजनाला 24

श्री ई. अहमद 24-25

श्री शरीफुद्दीन शारिक 25-26

श्री एच.डी. देवेगौड़ा 26-27

विषय **कॉलम**

श्री असादूद्दीन ओवेसी 27-28

श्री इन्दर सिंह नामधारी 28-29

डा. बलि राम 29-30

अध्यक्ष महोदया 30-36

प्रधानमंत्री और सभा के नेता का परिचय 36

विपक्ष के नेता का परिचय 37

मंत्रियों का परिचय 38-44

लोक सभा के पदाधिकारी

अध्यक्ष *

श्रीमती मीरा कुमार

उपाध्यक्ष **

श्री कड़िया मुंडा

सभापति तालिका ***

श्री बसुदेव आचार्य

श्री अर्जुन चरण सेठी

श्री बिरेन सिंह इंग्ती

श्रीमती सुमित्रा महाजन

महासचिव

श्री पी.डी.टी. आचारी

---

* 3-6-2009 को निर्वाचित

** 8-6-2009 को निर्वाचित

*** 29-5-2009 को नामनिर्देशित

भारत की राष्ट्रपति द्वारा 29-5-09 को निम्नलिखित दो पृथक आदेश जारी किए गए :

1. जबकि 1 जून, 2009 को लोक सभा की पहली बैठक के आरंभ होने से तुरंत पहले अध्यक्ष का पद रिक्त हो जाएगा और उपाध्यक्ष का पद भी रिक्त है :

अत: भारत के संविधान के अनुच्छेद 95 के खंड (1) द्वारा मुझे प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, मैं एतद्द्वारा लोक सभा के सदस्य **श्री माणिकराव होडल्या गावित** को 1 जून, 2009 को लोक सभा की बैठक आरंभ होने से लेकर उक्त सभा द्वारा अध्यक्ष के चुने जाने तक के लिए अध्यक्ष पद के कर्त्तव्यों का निर्वहन करने के लिए नियुक्त करती हूं।

प्रतिभा देवीसिंह पाटिल
भारत की राष्ट्रपति

2. मैं एतद्द्वारा **श्री बसुदेव आचार्य, अर्जुन चरण सेठी, बिरेन सिंह इंग्ती और श्रीमती सुमित्रा महाजन** को नियुक्त करती हूं जिनमें से किसी के भी समक्ष लोक सभा के सदस्य भारत के संविधान के अनुच्छेद 99 के उपबंधों के अनुसार शपथ ले सकते हैं अथवा प्रतिज्ञान कर सकते हैं।

प्रतिभा देवीसिंह पाटिल
भारत की राष्ट्रपति

इन्टरनेट

लोक सभा की सत्रावधि के प्रत्येक दिन के वाद-विवाद का मूल संस्करण भारतीय संसद की निम्नलिखित वेबसाइट पर उपलब्ध है:

http://www.parliamentofindia.nic.in

लोक सभा की कार्यवाही का सीधा प्रसारण

लोक सभा की संपूर्ण कार्यवाही का लोक सभा टी.वी. चैनल पर सीधा प्रसारण किया जाता है। यह प्रसारण सत्रावधि में प्रतिदिन प्रातः 11.00 बजे लोक सभा की कार्यवाही शुरू होने से लेकर उस दिन की सभा समाप्त होने तक होता है।

लोक सभा वाद-विवाद बिक्री के लिए उपलब्ध

लोक सभा वाद-विवाद के मूल संस्करण, हिन्दी संस्करण और अंग्रेजी संस्करण की प्रतियां तथा संसद के अन्य प्रकाशन, विक्रय फलक, संसद भवन, नई दिल्ली-110001 पर बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

पी.एल.एस. - 48/200/2009 (एन.)
230

© 2009 प्रतिलिप्यधिकार लोक सभा सचिवालय

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों (तेरहवां संस्करण) के नियम 379 और 382 के अंतर्गत प्रकाशित और चौधरी मुद्रण केन्द्र, 12/3 श्रीराम मार्ग, साउथ मौजपुर, दिल्ली-110 053 द्वारा मुद्रित।

लोक सभा

बुधवार, 3 जून, 2009/13 ज्येष्ठ, 1931 (शक)

लोक सभा पूर्वाह्न ग्यारह बजे समवेत हुई।

[सामयिक अध्यक्ष महोदय (**श्री माणिकराव होडल्या गावित**) *पीठासीन हुए*)]

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: महासचिव, उन सदस्यों का नाम पुकारा जाये, जिन्होंने शपथ नहीं ली है अथवा प्रतिज्ञान नहीं किया है।

महासचिव: श्री बलिराम कश्यप।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय: श्री बलिराम कश्यप जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है, इसलिए वे अपनी सीट से ही शपथ ग्रहण कर रहे हैं।

पूर्वाह्न 11.01 बजे

शपथ अथवा प्रतिज्ञान - *जारी*

[अनुवाद]

छत्तीसगढ़		
श्री बलिराम कश्यप (बस्तर)	शपथ	हिन्दी
हरियाणा		
श्री नवीन जिन्दल (कुरुक्षेत्र)	शपथ	हिन्दी
महाराष्ट्र		
श्री भास्करराव बापूराव खतगांवकर पाटील	शपथ	हिन्दी
श्री राजू शेट्टी (हातकंगले)	शपथ	मराठी
उड़ीसा		
श्री मोहन जेना (जयपुर)	शपथ	उड़ीया
तमिलनाडु		
श्री जे.एम. आरून रशीद (थेनी)	प्रतिज्ञान	तमिल
पश्चिम बंगाल		
श्री जसवंत सिंह (दार्जीलिंग)	शपथ	हिन्दी

पूर्वाह्न 11.08 बजे

अध्यक्ष का निर्वाचन

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: अब मैं लोक सभा अध्यक्ष के निर्वाचन का प्रस्ताव लेता हूं। मैं श्रीमती सोनिया गांधी को अपना प्रस्ताव पेश करने के लिए बुलाता हूं।

श्रीमती सोनिया गांधी (रायबरेली): महोदय, मैं प्रस्ताव करती हूं:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

अध्यक्ष महोदय: अब श्री प्रणब मुखर्जी प्रस्ताव का समर्थन करेंगे।

[अनुवाद]

वित्त मंत्री (श्री प्रणब मुखर्जी) : महोदय, मैं श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[हिन्दी]

श्री लाल कृष्ण आडवाणी (गांधी नगर): अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्रीमती सुषमा स्वराज (विदिशा): अध्यक्ष जी, श्री लालकृष्ण आडवाणी जी द्वारा प्रस्तावित नाम का मैं समर्थन करती हूं।

[अनुवाद]

रेल मंत्री (कुमारी ममता बनर्जी): महोदय, मैं प्रस्ताव करती हूं:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

डा. रत्ना डे (हुगली): महोदय, मैं कुमारी ममता बनर्जी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का समर्थन करती हूं।

श्री टी.आर. बालू (श्रीपेरूम्बुदूर): मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

अध्यक्ष महोदय: श्री ए.के.एस. विजयन - उपस्थित नहीं हैं।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी): मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री बलिराम (लालगंज): मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री दारा सिंह चौहान (घोसी): मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री शरद यादव (मधेपुरा): मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

अध्यक्ष महोदय: श्री राजीव रंजन सिंह - अनुपस्थित।

[अनुवाद]

श्री अर्जुन चरण सेठी (भद्रक): मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री भर्तृहरि महताब (कटक): महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

कृषि मंत्री तथा उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री (श्री शरद पवार): मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

नागर विमानन मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री प्रफुल पटेल): महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[हिन्दी]

श्री लालू प्रसाद (सारण): मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री जगदानन्द सिंह (बक्सर): मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री (डा. फारुख अब्दुल्ला): मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

डा. मिर्जा महबूब बेग (अनंतनाग): महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री ई. अहमद): मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री मोहम्मद ई.टी. बशीर (पोन्नानी): महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री असादूद्दीन ओवेसी (हैदराबाद): मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री थोल तिरूमावलावन (चिदम्बरम): महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय: श्री रामसुन्दर दास - उपस्थित नहीं हैं।

[हिन्दी]

श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा पेश किया गया एवं श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा समर्थित प्रस्ताव विचार के लिए सभा के समक्ष है। मैं इस प्रस्ताव को सभा में मतदान के लिए रखता हूं।

[अनुवाद]

प्रश्न यह है:

"कि श्रीमती मीरा कुमार, जो इस सभा की सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय: प्रस्ताव स्वीकृत हो गया है और श्रीमती मीरा कुमार को इस सभा का अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया जाता है। उन्हें अध्यक्ष का आसन ग्रहण करने के लिए आमंत्रित करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

(प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह, सभा के नेता श्री प्रणब मुखर्जी और विपक्ष के नेता श्री लाल कृष्ण आडवाणी श्रीमती मीरा कुमार को अध्यक्ष के आसन तक ले गए)

पूर्वाह्न 11.16 बजे

[**अध्यक्ष महोदय (श्रीमती मीरा कुमार)** पीठासीन हुईं]

पूर्वाह्न 1.16¼ बजे

अध्यक्ष महोदया को बधाइयां

[अनुवाद]

प्रधानमंत्री (डा. मनमोहन सिंह): अध्यक्ष महोदया, मैं इस सम्माननीय अध्यक्ष पद पर आपके सर्वसम्मति से निर्वाचित होने पर सरकार और अपने देशवासियों की ओर से आपका स्वागत करते हुए अत्यंत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं।

महोदया, कई तरह से यह एक ऐतिहासिक अवसर है। पहली बार इस सम्माननीय सभा की एक महिला सदस्य और वह भी दलित समुदाय की महिला, अध्यक्ष निर्वाचित हुई हैं। महोदया, इस सम्माननीय पद पर आपको निर्वाचित करते हुए हम संसद सदस्य अपने देश की महिलाओं द्वारा की गई विभिन्न महान सेवाओं तथा देश के लिए दिये गये उनके महान योगदान के लिए उनकी प्रशंसा करते हैं।

महोदया, इस अवसर पर, मुझे उन दिनों की याद ताजा हो जाती है जब आपके यशस्वी पिता, बाबू जगजीवन राम भारत सरकार में एक वरिष्ठ मंत्री थे। मुझे कई बार उनसे बातचीत करने का अवसर मिला तथा उनका विवेक, ज्ञान तथा अनुभव सरकार के लिए बहुत उपयोगी साबित हुआ। आप विवेक और ज्ञान की मूर्ति स्वर्गीय बाबूजी की प्रतिमूर्ति हैं।

आपने देश की अनेकानेक रूप में सेवा कर अपना विशिष्ट योगदान दिया है। आप एक प्रतिष्ठित राजनयिक रही हैं। आप 25 से अधिक वर्षों से सांसद रही हैं। आप भारत सरकार में मंत्री रही हैं और मुझे विश्वास है कि आपका ज्ञान, विवेक और अनुभव इस सम्माननीय सभा के समक्ष आने वाले मुद्दों को निपटाने में अत्यंत उपयोगी साबित होंगे।

महोदया, इसके अलावा आप अपने मधुर, गरिमामय और कौशल भरे व्यक्तित्व के बल पर इस सभा में अक्सर

[डा. मनमोहन सिंह]

उत्पन्न होने वाली रोषपूर्ण स्थिति से बेहतर ढंग से निपट सकेंगी।

इन शब्दों के साथ मैं आपके सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित होने पर आपको बधाई देता हूं। मैं आपके दुर्वह दायित्वों के निर्वहन में सरकार की ओर से अपने सम्पूर्ण सहयोग का आश्वासन देता हूं।

मैं, आपके सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित होने पर पुनः आपका अभिवादन करता हूं और बधाई देता हूं।

वित्त मंत्री (श्री प्रणब मुखर्जी): अध्यक्ष महोदया, सभा के नेता के रूप में तथा सभा की ओर से, मैं आपके सर्वसम्मति से चुने जाने पर आपको बधाई देता हूं। प्रधान मंत्री ने एक राजनयिक, एक राजनीतिक संगठनकर्ता और सरकार में एक प्रशासक के रूप में आपके अनुभव के बारे में जानकारी दी, मैं उससे सहमत हूं। संसद में, विशेषकर इस सभा में आपका दीर्घ कार्यकाल का अनुभव आपको अपनी उन जिम्मेदारियों को निभाने में मदद करेगा जो इस समय आपको सौंपी गई हैं। अध्यक्ष महोदया, मैं जानता हूं कि यह कोई आसान काम नहीं है और इसलिए हम सभी मिलकर सभा को सुचारू और सही ढंग से चलाने में आपकी मदद करेंगे। यदा-कदा सभी सदस्य एक साथ मिलकर तो नहीं, लेकिन कुछ सदस्य आपके लिए समस्या पैदा कर सकते हैं। ऐसे में हमारा प्रयास होगा कि हम आपकी सहायता करें। जैसा कि प्रधानमंत्री ने सरकार की ओर से और हमारी पार्टी की ओर से आपको आश्वासन दिया है, मैं आपको बताना चाहूंगा और संभवतः सभा भी मेरा समर्थन करेगी कि पंद्रहवी लोकसभा, में हम कोई व्यवधान न पैदा करने और सिर्फ वाद-विवाद और चर्चा करने का एक नया उदाहरण प्रस्तुत करने की कोशिश करेंगे। निःसंदेह, प्रजातंत्र में भिन्न-भिन्न विचार हो सकते हैं, लेकिन हर बिंदु पर चर्चा होनी चाहिए, हर दृष्टिकोण से वाद-विवाद होना चाहिए। इस दृष्टिकोण से हम इस संस्था के प्रति महान योगादन दे सकते हैं। यह वास्तव में लोकतंत्र का मंदिर है।

कुछ ही समय पूर्व हमने लोकतंत्र का बड़ी धूमधाम से उत्सव मनाया। 70 करोड़ से ज्यादा लोगों ने 543 प्रतिनिधियों को चुनने के लिए अपने मताधिकार का उपयोग किया। हम इस पावन अवसर पर यहां एकत्र हुए हैं। मैं आपको बधाई देना चाहता हूं। यद्यपि महान व्यक्तित्व वाले आपके पिता जी के साथ लम्बे समय तक काम करने का मुझे अवसर नहीं मिला था, लेकिन सत्तर के दशक के शुरू में एक कनिष्ठ मंत्री के रूप में मुझे उनके साथ काम करने का मौका मिला था। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि जो विरासत आपको मिली है और वर्षों में जो कुशाग्रता आपने हासिल की है उससे इन जिम्मेदारियों के निर्वहन में आपको मदद मिलेगी जैसा कि श्री बल्लभभाई पटेल और श्री जी.वी. मावलंकर से लेकर आपके तत्कालीन पूर्ववर्ती श्री सोमनाथ चटर्जी जैसे महान व्यक्तियों ने इस पद को सुशोभित करते हुए किया था। उन्होंने निष्पक्षता, विवेकशीलता और सही समय पर सही निर्णय लेने का अद्वितीय रिकार्ड कायम किया है। धन्यवाद, अध्यक्ष महोदया।

[हिन्दी]

श्री लाल कृष्ण आडवाणी (गांधी नगर): माननीय अध्यक्ष महोदया, 15वीं लोक सभा का प्रथम महत्वपूर्ण कार्य अभी-अभी सम्पन्न हुआ है। मैं स्वीकार करूंगा कि जब 22 मई को मंत्रिमंडल का गठन हुआ था, तब ऐसा नहीं लगता था कि इस प्रकार आज का अवसर आएगा। क्योंकि उस समय आप मंत्रिमंडल के उन 19 सदस्यों में से एक थीं, जिन्हें शासन का दायित्व सौंपा गया था। शायद इसी कारण कल या आज मैंने एक समाचार यह भी देखा कि आपके अपने क्षेत्र के लोग जरा चकित हो गए कि यह कैसे हुआ। उन्होंने आपके मंत्री होने की कल्पना की थी और वे समझते थे कि आप हमारे क्षेत्र की सेवा करेंगी और अब वह दूसरा दायित्व संभाल रही हैं। लेकिन मैं मानता हूं कि आप मंत्री रहकर जितनी सेवा अपने क्षेत्र की कर सकती थीं, उससे कहीं-कहीं अधिक इस नए पद पर बैठकर आप कर सकेंगी। इसीलिए अगर वहां के आपके मतदाताओं को, क्षेत्र के निवासियों को कुछ निराशा हुई है, तो वह इस कारण हुई है कि वे सम्भवतः आपके इस नए गरिमामय दायित्व को पहचान नहीं पाए, अन्यथा तो इस पद पर बैठकर कोई व्यक्ति सरकार के किसी भी व्यक्ति या शासन के किसी भी अधिकारी को अपने क्षेत्र के बारे में एक पत्र भी लिख कर भेज देगा, तो वह काम निश्चित रूप से हो जाएगा, इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है।

मैं आज के इस अवसर पर स्मरण करता हूं कि आपके पूज्य पिता जी के साथ मुझे भी एक ही मंत्रिमंडल में कार्य करने का अवसर मिला है। उस समय हम लोग मोरारजी भाई देसाई के प्रधानमंत्रित्व में कार्यरत मंत्रिमंडल

में कार्य करते थे। उनकी प्रशासनिक क्षमता के बारे में सब लोग बहुत प्रभावित होते थे, उनकी प्रशासनिक क्षमता अद्‌भुत थी।

प्रधान मंत्री जी ने और सदन के नेता ने जो आपके अनुभव का उल्लेख किया है, वह सही है। उसके साथ-साथ आपके पूज्य पिता जी की विरासत से जो आपको प्राप्त हुआ है, उन सब गुणों के सहारे, मुझे विश्वास है कि आप अपने इस नए दायित्व का बहुत सफलता से निर्वहन करेंगी।

विट्‌ठल भाई पटेल जी के समय से लेकर जो भी यहां के अध्यक्ष रहे हैं, उन्होंने जो उच्च परम्पराएं स्थापित की हैं, कहा गया कि विट्‌ठल भाई दूसरे भवन में, दूसरे सदन में थे, यह सही है। लेकिन उस सदन में मुझे भी रहने का अवसर मिला है, मेट्रोपोलिटन कौंसिल के सदस्य के नाते, अध्यक्ष के नाते।

आज मैं आपका इस पद पर पदासीन होने के लिए अभिनंदन करता हूं और आपको शुभ कामनाएं प्रेषित करता हूं कि आपके नेतृत्व में 15वीं लोक सभा सुचारू रूप से चलेगी और आप अपने दायित्व को बखूबी निभाएंगी। अगर कोई कमियां पहले रही हैं, उनसे यह सभा मुक्त हो जाएगी।

[अनुवाद]

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा): अध्यक्ष महोदय, जब हमें बताया गया कि लोक सभा के अध्यक्ष पद के लिए आपके नाम पर विचार किया जा रहा है तो मेरी तत्काल प्रतिक्रिया यही थी कि विधायकों में 33 प्रतिशत आरक्षण देने संबंधी विधेयक जो एक दशक से ज्यादा समय से लम्बित है अब पारित हो जाएगा।

महोदया, एक राजनयिक के रूप में आपका लम्बा अनुभव रहा है; एक संसद सदस्य के रूप में दो दशक से ज्यादा का तथा एक प्रशासक के रूप में भी आपका अनुभव रहा है। सामाजिक न्याय के लिए आपका लम्बा संघर्ष, दलितों के लिए आपकी मांग निश्चित रूप से सभा की शिष्टता और प्रतिष्ठा को बनाए रखने में आपकी जिम्मेदारियों के निर्वहन में आपकी मदद करेंगी।

महोदया, लोक सभा वाद-विवाद और चर्चा के लिए है। यदि यहां वाद-विवदा और चर्चा न हो तो यह सभा किस काम की?

पूर्व में महोदया, हमने जो देखा है...

कुछ माननीय सदस्य: कृपया उनको 'महोदया' कह कर संबोधित करें।...(*व्यवधान*)

श्री बसुदेव आचार्य: ...कैसे वाद-विवाद को कम किया जा रहा था और हमने देखा है कि सरकार विधेयक को कैसे बिना चर्चा के और शीघ्र पारित करने की इच्छुक थी।

मेरा विश्वास है कि इस सभा के सभी वर्ग के सदस्यों के हितों की रक्षा करने हेतु आप निश्चित रूप से एक बंधु, दार्शनिक और पथप्रदर्शक के रूप में काम करेंगी।

महोदया, हमने विगत में देखा है कि सभा की कार्यवाही में किस प्रकार व्यवधान पैदा किया जा रहा था।...(*व्यवधान*) महोदय, एक सर्वसम्मत संकल्प था।

कुछ माननीय सदस्य: कृपया उनको 'मैडम' कहकर संबोधित करें।...(*व्यवधान*)

श्री बसुदेव आचार्य: सभी दलों के नेताओं की बैठक में एक सर्वसम्मत संकल्प पारित हुआ था कि वर्ष में सभा की कम से कम 100 बैठकें होंगी। मेरा ख्याल है कि एक वर्ष के दौरान 100 बैठक आयोजित किए जाने का सभी समर्थन करेंगे।

महोदया, मैं दिल से उम्मीद करता हूं...

कुछ माननीय सदस्य: बहुत अच्छी बात है।

श्री बसुदेव आचार्य: महोदया, आज का दिन भविष्य में याद रखा जाएगा। आज ऐतिहासिक दिन है क्योंकि आज प्रथम बार एक महिला लोक सभा की अध्यक्ष बनी हैं। महोदया, मैं सच्चे मन से उम्मीद करता हूं कि सभी सदस्यों को अपनी बात रखने का अवसर प्राप्त होगा क्योंकि इस 15वीं लोक सभा के अधिकांश सदस्य 14वीं लोक सभा की तरह ही नए हैं। वे लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं और आज अधिकांश लोग के समक्ष समस्याएं हैं। हमारे यहां गरीबी, अशिक्षा और कई अन्य समस्याएं हैं। सदस्य देश के उन लोगों की समस्याओं को रखना चाहते हैं जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं।

इसलिए, महोदया, मैं सच्चे मन से उम्मीद करता हूं कि आपके नेतृत्व में, देश की जनता की आवाज उनके प्रतिनिधियों के माध्यम से सुनी जा सकेंगी।

महोदया, आप सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुनी गई हैं।

[श्री बसुदेव आचार्य]

इससे यह गलत अर्थ नहीं लगाया जाना चाहिए कि हमने आपके नाम का नामांकन नहीं किया है। वस्तुत: सरकार ने समुचित रूप में हमसे परामर्श नहीं किया। लेकिन हम अपना पूरा सहयोग देते हैं।

मैं, अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से और सभी वाम पंथी दलों की ओर से आपको पूर्ण सहयोग देते हैं। इस सभा में वाद-विवाद के स्तर को बढ़ाने के आपके प्रयास में इस सभा की गरिमा और शिष्टता को बनाए रखने के लिए हम सभी आपका सहयोग करेंगे।

अध्यक्ष महोदया, इन्हीं शब्दों के साथ मैं पुन: आपको लोक सभा के अध्यक्ष पद पर आसीन होने के लिए बधाई देता हूं।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी): माननीय अध्यक्ष महोदया, हम आपको बधाई और शुभकामनाएं देते हैं। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप विपक्ष का सबसे ज्यादा ध्यान रखेंगी, क्योंकि किसी भी दल या पार्टी की सरकार हो, वह अपनी आलोचना को दबाए रखना चाहती है, विपक्ष की आवाज को दबाने की कोशिश करती है और हम विपक्ष के लोग सरकार की कमियों को जनहित और देशहित में सवालों के माध्यम से उठाते हैं। इसलिए विशेष रूप से हमारा आग्रह यही है कि आपका संरक्षण विपक्ष को ज्यादा मिले। आपको स्पीकर बनाना, सरकार का एक अच्छा कदम है और उसके लिए हम पूरे सदन को, माननीय प्रधान मंत्री जी, यू.पी.ए. अध्यक्ष सोनिया गांधी जी और यहां बैठे सभी नेताओं को धन्यवाद देते हैं कि एक महिला पहली बार लोक सभा में स्पीकर के पद पर चुनी गयी हैं। यह एक ऐतिहासिक क्षण है।

सदन में बहुत से सम्मानित सदस्यों ने आपके परिवार के बारे में, आपके पिताजी के बारे में बहुत कुछ कहा है। हमें आपके पिताजी के साथ काम करने का अवसर मिला। एक ऐसा अवसर आया कि चौधरी चरण सिंह जी और बाबू जगजीवन राम जी एक मंच पर थे। शरद यादव जी को पता होगा कि उन्होंने कई सभाएं एक मंच से की थीं। उन दो सभाओं में हम भी उपस्थित रहे हैं। उत्तर प्रदेश समाजवादी, जो दूसरा दल था लोकदल के अध्यक्ष थे। आपके परिवार का देश में परम्परागत और पैतृक सम्मान रहा है तथा देश के लिए सेवाएं रही हैं। यह पंचायत देश की सबसे बड़ी पंचायत है। इसकी अध्यक्ष आप हैं। आपका मार्गदर्शन और आपके ऐसे विचार हमारे सामने आएं, जिससे हम लोग और भी अच्छे ढंग से देश की जनता की समस्याओं को आपके सामने रख सकें।

इन्हीं शब्दों के साथ हम आपको बधाई देते हुए कामना करते हैं कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में सदन के चलते समय, जिस सबसे उच्च पद पर आप हैं, उस पद की गरिमा हम सब लोग बनाए रखेंगे। आपकी तरफ से भी ऐसे निर्णय आएं, जिससे पूरा सदन आपके उच्च पद का आदर और सम्मान करे।

इन्हीं शब्दों के साथ पुन: मैं आपको बधाई देता हूं कि आप कामयाब हों।

[अनुवाद]

रेल मंत्री (कुमारी ममता बनर्जी): अध्यक्ष महोदया; आज हमें वास्तव में केवल इस बात की खुशी नहीं है कि इस सभा ने सर्वसम्मति से एक महिला अध्यक्ष को चुना है बल्कि हमें आप पर गर्व है क्योंकि हम आपके परिवार जगजीवन राम जी, और परिवार के अन्य सभी सदस्यों के भी योगदान के बारे में जानते हैं। महोदय, आज हम महसूस करते हैं कि यही लोकतंत्र का श्रेष्ठ स्वरूप है कि एक दो को छोड़कर सभी लोगों ने आपके सर्व सम्मत चुनाव का समर्थन किया और बाद में उन्होंने भी आपको समर्थन किया। हमें वास्तव में इस पर गर्व है। मैं यहां एक दोहे का उल्लेख करना चाहूंगी:

[हिन्दी]

"मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है,
वही होता है, जो मंजूरे खुदा होता है।"

[अनुवाद]

आज यह दलितों और अल्पसंख्यकों का संयुक्त योगदान है। यदि उनमें एकता है तो देश एकजुट रहेगा हमें इस पर गर्व है। महोदया, जहां तक महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने वाले विधेयक का संबंध है जब अटल जी थे तब सोनियाजी विधेयक को पुर:स्थापित करने की इच्छुक थी और विधेयक पुर:स्थापित हुआ भी था। लेकिन समस्या यह हो गई कि विधेयक पारित नहीं हुआ और यहां तक कि

इस पर चर्चा भी नहीं हुई। लेकिन आज हमें यह कहते हुए खुशी है कि यह 33 प्रतिशत आरक्षण नहीं है बल्कि संसद ने आपको 100 प्रतिशत आरक्षण दे दिया। हमें ऐसा कहते हुए गर्व महसूस हो रहा है।

आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस की ओर से हम आपको पूर्ण सहयोग देंगे, अपनी मां, माटी और मानुष की रक्षा के लिए पूर्ण एकता प्रदर्शित करेंगे।

श्री अर्जुन चरण सेठी (भद्रक): अध्यक्ष महोदया, लोक-सभा अध्यक्ष के सम्मानित पद पर आपके स्वागत में मैं तहेदिल से इस सभा के साथ हूं और इस अवसर पर अपने दल, बीजू जनता दल की ओर से, सभा और इसकी समितियों की कार्यवाहियों को सुस्थापित प्रक्रिया, व्यवहार, रीति और संसदीय परंपरा के अनुसार चलाने में पूर्ण समर्थन और सहयोग का आश्वासन देता हूं।

अध्यक्ष महोदया, एक प्रख्यात और विशिष्ट सांसद, स्वर्गीय जगजीवन राम जी की सुविख्यात पुत्री होने के नाते, इतिहास सदैव आपको लोक-सभा की प्रथम महिला अध्यक्ष के रूप में याद करेगा। इस मामले में आपको अन्य महिलाओं में, सुश्री बैट्टी बूथ्रोयड, यू.के. 'हाउस आफ कॉमन्स' की प्रथम और आज तक की एकमात्र महिला अध्यक्ष के साथ यह गौरव शेयर करने का अवसर हासिल हुआ है। इस सम्मानित पद पर आपके चुनाव से राष्ट्र और इस सभा, विशेषत: हमारे समाज और राज्य व्यवस्था के अतिसंवेदनशील और सीमांत वर्ग की आवाज सुनी जाएगी।

अध्यक्ष महोदया, भारतीय विदेश सेवा की प्रतिष्ठित परीक्षा उत्तीर्ण करने की वजह से आपके पास एक सफल राजनयिक के रूप में हासिल किए गए तथा विविध अन्य कई अनुभव हैं। लोगों के प्रतिनिधि के रूप में, पांचवीं बार लोक सभा में चुने जाने पर, आपने लोगों की आशाओं और अपेक्षाओं को साकार किया है। महत्वपूर्ण संसदीय समितियों के सदस्य के रूप में भी आपने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। केन्द्रीय मंत्री के रूप में, आप वर्ष 2007 में अत्यंत महत्वपूर्ण कानून अर्थात् अभिभावकों और वरिष्ठ नागरिकों का भरण पोषण और कल्याण संबंधी विधेयक लायीं जिसका मैं विशेष तौर पर जिक्र करना चाहता हूं। यह कार्य तो समाज के प्रति आपकी चिंता और प्रतिबद्धता का एक उदाहरण मात्र है।

एक सफल राजनयिक के रूप में आपका विशाल अनुभव राष्ट्रमंडल संसदीय संघ (सी.पी.ए.) और अंतर-संसदीय संघ (आई.पी.यू.) जैसे महत्वपूर्ण संगठनों और अंतर-संसदीय संपर्क बढ़ाने में भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। मैं समझता हूं कि भारत अगले वर्ष राष्ट्रमंडल अध्यक्षों/पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन की मेजबानी करेगा और इस सम्मेलन की मेजबानी में आपका बहुमूल्य योगदान मिलेगा।

मैं सभा द्वारा व्यक्त उस विश्वास और आस्था का समर्थन करता हूं जिसमें आशा की गयी है कि आप अध्यक्ष पद के साथ जुड़ी वस्तुनिष्ठता, तटस्थता और निष्पक्षता की परंपराओं को आगे बढ़ाते हुए नई ऊंचाईयों तक ले जाएंगी और इस सम्मानीय संस्था की प्रतिष्ठा और महत्ता को बनाए रखेंगी।

श्री टी.आर. बालू (श्रीपेरूम्बुदूर): अध्यक्ष महोदया, डी.एम.के. की ओर से मैं आपको इस सभा के अध्यक्ष पद पर चुने जाने पर बधाई देता हूं। मैं यह कहते हुए अत्यंत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं कि हमारे दल के लोग, चाहे सदन के अन्दर हों और बाहर हों, और विशेष रूप से हमारे नेता, डा. कलैगनार करुणा निधि, भारतीय राजनीति के 80 वर्ष से अधिक आयु वाले नेता, जो संयोगवश आज अपना 86वां जन्म दिवस मना रहे हैं, सचमुच प्रसन्न हैं। कल, उन्होंने आपकी प्रशंसा में एक बयान दिया है। वे काफी लम्बे समय तक आपके आदरणीय पिता, बाबू जगजीवन राम के साथ रहे थे। पेरियार ई.वी.आर., महान चिंतक और समाज सुधारक और डा. अरिगनार अन्ना के पश्चात, आपके पिता उन अनेक चीजों के लिए प्रेरणा स्त्रोत रहे जो तमिलनाडु में हो चुकी हैं।

यदि मैं ऐसा कहूं कि आज सबसे महत्वपूर्ण दिन है। आज भारत की राष्ट्रपति एक महिला हैं। सत्ता पक्ष की आदरणीय नेता, सोनिया गांधी जी भी एक महिला हैं। अब, आप लोकतंत्र के मन्दिर, भारतीय संसद के सम्मानित पद पर आसीन हैं जिससे भारत के दलितों और विशेषत: भारतीय महिलाओं में सही संकेत और उचित संदेश जाएगा। अध्यक्ष महोदया, यह एक उपयुक्त माहौल है जिसमें भारतीय संसद और राज्य विधानमंडलों में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण दिया जा सकता है। हम स्वयं को इस मुद्दे के लिए समर्पित कर दें और कम से कम इस संसद में इसे अधिनियमित कर दें और यह भी सुनिश्चित करें कि महिलाओं की यह मांग अविलंब पूरी की जाए।

अध्यक्ष महोदया, मुझे महान कवि सुब्रमण्यम भारती की

[श्री टी.आर. बालू]

कुछ पंक्तियां याद आ रही हैं। उन्होंने अपनी एक कविता में कहा है:

"पट्टंगल आलवदुम सट्टंगल सैइवदुम,
पारिनिलइंगे नडदा वन्दोम,
एट्टम आरिविनिल आनुक्कु पेन,
इलैपिल्लई काण ऐन्डरु कुम्मियडि।"

इसका अर्थ है, "हम, महिलाएं, यहां शासन करने और विधि निर्माण करने आई हैं। हम ज्ञान के सुदूरतम क्षितिज तक पहुंचती हैं और पुरुषों के समकक्ष ही हैं।" इस महान कवि ने यही कहा है। मैं समझता हूं कि आपके द्वारा अध्यक्ष पद के सम्मानित आसन को ग्रहण करने से आज यह बात सच हो गई है।

इन शब्दों के साथ ही मैं आपको बधाई देता हूं और कहना चाहता हूं कि हम निश्चित रूप से हर प्रकार से आपका सहयोग करेंगे।

[हिन्दी]

श्री चंद्रकांत खैरे (औरंगाबाद): अध्यक्ष महोदया, शिवसेना की ओर से मैं आपका स्वागत करने के लिए खड़ा हुआ हूं। माननीय शिवसेना प्रमुख बाला साहेब ठाकरे जी और माननीय उद्धव ठाकरे जी की ओर से मैं आपको शुभकामनाएं देता हूं। हमारे देश की राष्ट्राध्यक्ष भी एक महिला हैं। यह मातृशक्ति की एक बहुमान्य मिसाल है जिसके कारण सभाध्यक्ष का पद मिला है। आपकी भी एक परम्परा है क्योंकि आप बहुत ही एक जानेमाने और सुप्रसिद्ध नेता बाबू जगजीवन राम जी की सुपुत्री हैं जिन्होंने देश के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण काम किया है। उनका अनुभव भी आपको विरासत में मिला है और उसी कारण से आप पांचवीं बार लोक सभा में हैं। आपने पिछले समय भी मंत्रीपद का कार्यभार संभाला और गरीबों की आपने अपने विभाग के माध्यम से बहुत सेवा की। मातृशक्ति के नाते से यहां आपके बैठने के बाद हम लोग हमारी हिन्दुत्व की भूमिका आपके माध्यम से यहां रखेंगे और मैं उम्मीद करूंगा कि उसको आप हमेशा अनुमति देते रहेंगे। मैं यह भी कहूंगा कि हम विपक्ष में भी हैं लेकिन हमें सत्ता पक्ष जितना ही आप न्याय देंगी। अभी यहां जो चर्चा हुई है कि आपके यहां इस पद पर आने से महिलाओं का और भी आरक्षण बढ़ेगा। मैं कहूंगा कि महिलाओं को आरक्षण न देते हुए भी अभी इस लोक सभा में महिलाओं का प्रतिशत दस प्रतिशत तक हो गया। शिव सेना पक्ष की जो भूमिका है, वह यह है कि हम लोग महिला आरक्षण का विरोध तो नहीं करेंगे लेकिन पार्टी बेस आप आरक्षण रखिए। एक समय चुनाव आयोग ने जैसा बताया था, उसी माध्यम से हम लोग भी उसकी मान्यता रखेंगे। चुनाव आयोग ने जैसे पार्टी आधारित आरक्षण रखने की बात कही थी, उसके लिए हमारी पार्टी का हमेशा सहयोग रहेगा। आपके आने के बाद से निश्चित रूप से कई लोगों को यहां उम्मीद हो सकती है कि महिला आरक्षण का बिल आएगा। हमारा कहना है कि वह बिल जब आएगा, तब आएगा लेकिन हमारी भूमिका यह है। लेकिन मातृशक्ति के नाते से हम आपका बहुत-बहुत अभिनन्दन करते हैं। हमारी शिव सेना की ओर से आपको हमेशा सहयोग मिलता रहेगा, यह मैं आपको वचन देता हूं।

[अनुवाद]

डा. एम. तम्बिदुरई (करूर): अध्यक्ष महोदया, 'ए.आई.ए.डी.एम.के.' दल, जिसका मैं प्रतिनिधित्व करता हूं, पन्द्रहवीं लोक-सभा में इस सम्मानीय सभा के अध्यक्ष पद पर आपके चुने जाने के इस ऐतिहासिक अवसर पर आपको बधाई देने में गौरवान्वित महसूस करता हूं।

मैं आपको तहेदिल से बधाई देता हूं। स्वतंत्रता के पश्चात यह प्रथम अवसर है कि इस सभा में हमें एक महिला अध्यक्ष मिली हैं और हम इसका स्वागत करते हैं।

हमारे दल की महासचिव, माननीय 'अम्मा' भी विधानमंडलों में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण के पक्ष में हैं।

महोदया, आपको ध्यान होगा कि 1998-99 में जब मैं विधि मंत्री था, तो मैंने महिला आरक्षण विधेयक की शुरुआत की थी और इसे प्रस्तुत किया था। लेकिन पहली बार तो मुझे इस सभा में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा था। लेकिन मैं दूसरी बार इसे सफलतापूर्वक प्रस्तुत कर पाया था। यह विधेयक प्रस्तुत हो चुका है लेकिन अब तक पारित नहीं हुआ है। मुझे उम्मीद है, आपके कार्यकाल के दौरान यह विधेयक पारित हो जाएगा।

महोदया, आपके रूप में हमें एक बंधु, दार्शनिक और पथप्रदर्शक मिला है। मेरे दल के सदस्य वाद-विवाद, चर्चा और हमारी कार्यवाहियों के विधायी परिणामों की विषय-वस्तु

की गुणवत्ता में सुधार के प्रयास में आपके साथ होंगे। मुझे विश्वास है कि हमारे विचार-विमर्श में तर्क, सहानुभूति और गहरी प्रतिबद्धता जाहिर होगी।

महोदया, आज आप श्री विट्ठलभाई पटेल से लेकर श्री मावलंकर और अनेक अन्य महान पूर्ववर्तियों की श्रेणी में आ गईं हैं जिन्होंने केवल पद की महत्ता ही नहीं बढ़ायी बल्कि इस लोकतांत्रिक गणतंत्र की गरिमा, प्रतिष्ठा और सम्मान को भी बनाए रखा। आप 1985 से संसदीय प्रक्रिया को निकट से देखती रही हैं; मैं गर्वपूर्वक कहना चाहता हूं कि हम दोनों, पहली बार आठवीं लोक सभा के लिए चुने गए थे। पिछली लोक सभा में आपने माननीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री के रूप में कार्य किया जिसकी सभी ने सराहना की। मुझे विश्वास है, एक वकील और नौकरशाह होने के नाते, बिना किसी पक्षपात और पूर्वाग्रह के, आप सभा के सभी वर्गों के साथ न्याय करेंगी।

इस अवसर पर, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप विपक्षी दलों का भी कुछ ख्याल रखें सदैव कहा जाता है कि सत्ता पक्ष की चलती है और विपक्ष की बात नहीं सुनी जाती है। अतः, मेरा विचार है कि विपक्ष को आम आदमी से संबंधित मुद्दों को उठाने के लिए ज्यादा समय और अवसर दिए जाएं।

महोदया, अपने प्रतिष्ठित राजनैतिक जीवन में पन्द्रहवीं लोक सभा की अध्यक्ष के रूप में एक नए अध्याय की शुरुआत करने पर मैं आदरणीया 'पुराट्ची तलैवी', माननीय 'अम्मा' आल इंडिया द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम की महासचिव की ओर से तथा स्वयं अपनी ओर से आपका अभिनन्दन करता हूं और आपको पूर्ण सहयोग का आश्वासन देता हूं।

महदोया, मैं आपको आश्वासन देता हूं कि इस सभा की गरिमा और प्रतिष्ठा को बनाए रखने में आपको हमारा पूर्ण सहयोग मिलेगा। महोदया, पन्द्रहवीं लोक सभा के अध्यक्ष का पदभार ग्रहण करने पर मैं बहुत प्रसन्नता से और गर्व से आपको एक बार पुनः बधाई देता हूं।

कृषि मंत्री तथा उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री (श्री शरद पवार): महोदया, मुझे आपको इस देश के संसदीय लोकतंत्र के सर्वोच्च पद पर आसीन होने के अवसर पर बधाई देने में अपार खुशी हो रही है।

संभवतः इस सभा में आप एकमात्र सदस्य हैं जिसे प्रतिष्ठित नेताओं, पंडित जवाहरलाल नेहरू से लेकर वर्तमान प्रधानमंत्री तक से संबद्ध होने का अवसर मिला है। आपके पास देश के महान सपूत और स्वतंत्रता सेनानी बाबू जगजीवन राम की विरासत है।

वस्तुतः, मुझे अपनी युवावस्था के दिन याद हैं जब मैं राज्य में कृषि मंत्रालय का पदभार संभाल रहा था, बाबूजी राष्ट्रीय स्तर पर कृषि मंत्रालय देख रहे थे। मैं स्वीकार करता हूं कि मैंने उनके जैसा कुशल प्रशासक नहीं देखा। उनकी प्रशासनिक क्षमता के कारण देश में हरित क्रांति आई। मुझे उनके भाषणों को सुनने का अवसर मिला है; वे हिन्दी और अंग्रेजी के सर्वोत्तम वक्ताओं में से एक थे; यह बात मैंने बाबूजी में देखी है। अतः आपके पास उस महान व्यक्ति की विरासत है। हमने संसद में आपके गत चार-पांच कार्यकालों के दौरान देखा है कि आपने उस विरासत को बनाए रखने का प्रयास किया है।

अध्यक्ष महोदया, हमने एक साथ कार्य किया है; हमने अनेक अवसरों पर यह देखा है कि आप समाज के कमजोर वर्गों के हित के लिए गंभीर थी। मुझे याद है जब हम दोनों ने उड़ीसा का दौरा किया और कंधमाल के प्रभावित इलाके में एक दिन बिताया, और विशेष रूप से, जब हमने उस शिविर का दौरा किया जहां सभी प्रभावित लोग ठहरे हुए थे - मैंने देखा था कि आप बच्चों और विशेषतः, महिलाओं से उनकी समस्याओं के बारे में चर्चा कर रही थी; मैंने देखा कि आप उनकी बातें सुन रही थी। मुझे यह भी याद है कि उसी दिन, जब हम भुवनेश्वर से लौटे और जब हम उड़ीसा सरकार के अधिकारियों के साथ चर्चा कर रहे थे तब मैंने औरत का दिल देखा और उनकी दृढ़ता महसूस की जो आपने उस बैठक में दर्शाई थी।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं और मेरे सभी सहयोगी आपको पूर्ण सहयोग देंगे। मुझे विश्वास है कि हमारा देश और भारतीय संसद आपके योगदान को याद रखेंगे।

[हिन्दी]

श्री शरद यादव (मधेपुरा): महोदया, मैं आपको इस पद पर आम सहमति से विराजमान होने के लिए बधाई देता हूं। इस मौके पर मैं निवेदन करूंगा कि इस सदन से बेहतर जगह समूचे देश में कहीं नहीं मिलती। 14वीं लोक सभा में यहां श्री सोमनाथ दा बैठते थे। दुनिया की न्याय व्यवस्था में मुझे ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता कि

[श्री शरद यादव]

15-16 लाख लोगों के द्वारा चुने हुए लोगों को इस सदन से 13 दिन में उनके आचरण की मर्यादा पर निकालने का काम किया। जिस समय मैं इस सदन में आया था, यहां श्रीमान अटल बिहारी वाजपेयी जी थे, स्वर्गीय श्री मधु लिमये जी थे, स्वर्गीय पीलू मोदी थे, श्री श्याम नंदन मिश्रा थे, श्री ज्योतिर्मय बसु थे। इस सदन में एक से एक बढ़कर लोगों की जीवंत बहस को मैंने देखा है। जैसे-जैसे इसकी उम्र बढ़ रही है, मैं पूरी तरह से नहीं कहता, लेकिन वैसे-वैसे उसमें गिरावट आ रही है। बहस सगुण होती है, हालांकि कबीर के निर्गुण भजन भी हैं और सगुण भजन भी हैं।

मैं इस सदन में बाबूजी का स्मरण भी करना चाहूंगा। जब वह यहां बहस करते थे तो उनकी भाषा, उनका जमीन का अनुभव, जैसे जमीन पर राल तैरती है, वैसे इस सदन में काम चलता था। मैं आपसे यही विनती करूंगा कि हम सगुण बहस के लिए सहमत हुए हैं, निर्गुण बहस के लिए सहमत नहीं हुए हैं। सगुण बहस होगी तो लोक सभा सार्थक है और यदि इससे निर्गुण बहस होगी तो परेशानी होगी। जैसा भाई मुलायम सिंह जी ने कहा, कुछ लोगों ने कुछ बातों का जिक्र किया, जो विवादास्पद हैं। मैं उन पर जाना नहीं चाहता, चूंकि सदन का पहला दिन है। मैं भी बहुत बोल सकता था, लेकिन वह मर्यादा के विपरीत होगा। जिन लोगों ने बोला है, उन्होंने मर्यादा लांघी है और जब इस सदन में मर्यादा लांघी जायेगी तो मर्यादा को रोकने का काम भी जरूर होगा।

दुनिया में सबसे ज्यादा लाचार और बेबस लोग हैं। जो सबसे ज्यादा मेहनत करते हैं। लेकिन जैसे-जैसे आजादी की उम्र बढ़ती है, उनकी जिंदगी और तबाह होती जाती है। मैं समझता हूं कि यहां सगुण बहस होगी। लेकिन मेरी आपसे विनती है, हमारा आपसे सम्पर्क का बहुत लम्बा अरसा है। आप जब इस क्षेत्र में भी नहीं थीं, तब भी हर सुख-दुख में हम लोग साथ थे। मैं स्वर्गीय बाबू जी का स्मरण करना चाहूंगा। मैं आपसे इतनी आशा और विश्वास करूंगा कि यहां जो बहस हो, वह जीवंत हो, यहां जो बहस हो, उसका इस देश के लोगों के साथ तारतम्य हो, संतुलन हो और यदि यहां किसी तरह का असंतुलन होगा तो शांति रखना और यह कहना कि आम सहमति से सदन चलना चाहिए, मुश्किल होगा। मैं समझता हूं कि हिंदुस्तान के जो वाजिब लोग हैं, उनके हक-हकूक में सार्थक सदन चलना चाहिए।

इसलिए अंत में बात लम्बी न करके मैं आपका अभिनंदन करता हूं और आपको हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। लेकिन मैं आपको सगुण बहस के लिए बधाई देता हूं, आप यहां सगुण बहस का रास्ता अपनाइये। इन्हीं शब्दों के साथ-साथ मैं आपका बहुत-बहुत शुक्रिया अदा करता हूं।

मध्याह्न 12.00 बजे

[अनुवाद]

श्री नामा नागेश्वर राव (खम्माम): महोदया, मैं तेलगूदेशम दल की ओर से आपको सर्वसम्मति से इस सभा की अध्यक्ष चुने जाने पर बधाई देता हूं।

[हिन्दी]

भारत देश में 50 प्रतिशत महिलाये हैं और एक दलित महिला को इस पद पर चुनना बहुत ही प्रसन्नता की बात है।

मैडम स्पीकर, हमारी पार्टी के अध्यक्ष और आन्ध्र प्रदेश के फॉर्मर चीफ मिनिस्टर, श्री चन्द्रबाबू नायडू भी 1998 में असैम्बली में एक दलित आदमी को स्पीकर पद पर लेकर आये थे। आन्ध्र प्रदेश असैम्बली में पहली दफा एक दलित स्पीकर बनाया गया। उसी तरीके से यहां भी एक दलित महिला को स्पीकर बनाया गया है। जिस तरह से आपको एडमिनिस्ट्रेशन का अनुभव पूरी तरह से है, उसी तरह से स्व. बाबू जगजीवन राम जी की बेटी होते हुये आपको पौलिटिकल एडमिनिस्ट्रेशन का भी अनुभव है। इसलिये हम लोग आपसे पूरी उम्मीद करते हैं कि नवभारत निर्माण के लिये जो बनाना है या जिसकी हमें आकांक्षा है, उसे पूरा करने का मौका मिलेगा। मैं इस हाउस में पहली दफा आया हूं और कई दूसरे लोग भी पहली दफा यहां आये हैं। मुझे उम्मीद है कि इस हाउस में जो नये यूथ और नई महिलायें आयी हैं, उन्हें बोलने का पूरा-पूरा मौका देंगी।

मैडम स्पीकर, हम आपसे यह भी उम्मीद करते हैं कि अपोजीशन पार्टी को कंस्ट्रक्टिव सजेशन्स और व्यूज एक्सप्रेस करने के लिये आप ज्यादा टाइम देंगे।

मैडम स्वीकर, मैं अपनी पार्टी तेलुगु देशम के कोलीग्ज के बिहाफ पर कंस्ट्रक्टिव सजेशन्स की सपोर्ट देते हुये अपनी बात खत्म करता हूं।

[अनुवाद]

श्री गुरूदास दासगुप्त (घाटल): महोदया, भारतीय संसद

और भारतीय लोकतंत्र के लिए यह वास्तव में एक महान क्षण है। भारतीय लोकतंत्र के मंदिर की अध्यक्षा के रूप में आपका चुना जाना वास्तव में बहुत बड़ी बात है। यह प्रशंसनीय कदम उठाने के लिए मैं सरकार को बधाई देता हूं। भारत के राष्ट्रपति के रूप में एक महिला को चुने जाने के पश्चात यह प्रवृत्ति जारी रहनी चाहिए। आज हमने लोक सभा के अध्यक्ष के रूप में एक महिला को चुना है। यह सभी अर्थों में एक नए अध्याय की शुरुआत है। यह भारतीय संसदीय प्रणाली में एक नए अध्याय की शुरुआत है। यह सचमुच भारत के सामाजिक जीवन में भारतीय महिलाओं द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका की वास्तविक रूप से स्वीकारोक्ति है।

महोदया, मुझे विश्वास है कि आपके नेतृत्व में यह सभा नई ऊंचाइयां छुएगी। मुझे पूरी उम्मीद है कि रुकावटें और व्यवधान कम होंगे और चर्चा ज्यादा होगी।

राष्ट्रीय समस्याएं, जो देश के सामने आ रही हैं, वे बेहतर ढंग से प्रस्तुत की जा सकेंगी। मेरा विश्वास है कि एक बहुदलीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में असंतोष जताने के अधिकार की रक्षा और उसका सम्मान किया जाना आवश्यक है। महोदया, मुझे विश्वास है कि आपके नेतृत्व में आलोचना का अधिकार, व्यैक्तिक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति का अधिकार, ऐसी नीतियां, जिन्हें मैं अथवा हम नकारात्मक समझें, के विरोध का अधिकार का सम्मान किया जाएगा और उसकी रक्षा की जाएगी जिससे देश की महान परंपरा के अनुरूप एक विरासत का सृजन होगा। मुझे आशा है कि भारतीय संसद के सत्र ज्यादा अवधि के होंगे और संसदीय व्यवस्था में छोटे-छोटे सत्र नहीं होंगे जैसाकि पीछे हुआ है। मैं समझता हूं कि अध्यक्ष के रूप में आपके चुनाव से सरकार ने एक नया अध्याय शुरू किया है और इसी प्रकार, सरकार काफी लंबे समय से चली आ रही लंबे सत्र, अर्थात् 100 दिन के सत्र की मांग पर ध्यान देगी ताकि एक सार्थक चर्चा हो और संसद सही अर्थों में उन नीतियों के निर्माण में महत्वपूर्ण माध्यम बने जिनकी देश को आवश्यकता है।

महोदया, मैं आपको बधाई देता हूं और इस महान सभा में सार्थक चर्चा के लिए अपनी ओर से पूरे सहयोग का आश्वासन देता हूं।

[हिन्दी]

श्री लालू प्रसाद (सारण): माननीय अध्यक्ष महोदया, सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने पर मैं आपको बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। विभिन्न पार्टियों के नेताओं को भी मैं सुझाव देना चाहता हूं कि आज जो अभिनन्दन समारोह है और पूरा सहयोग देने का हम सभी लोग आपको वचन दे रहे हैं, हमको डाउट है कि यह मेंटेन रहेगा या नहीं। स्वर्गीय जगजीवन बाबू जी ने कांग्रेस से हटकर कांग्रेस फॉर डैमोक्रेसी बनाया था। सन् 1977 में हम लोग आए थे। गांधी मैदान में जगजीवन बाबू जी ने बिहार के लोगों के बीच में भाषण दिया था कि जब आजादी का मंथन हुआ और दूध मथा गया तो दलित, गरीब, पिछड़ों और अकलियतों को मट्ठा भी नहीं मिला, मक्खन चंद घरों में कैद हो गया। अच्छी बात है कि सामाजिक न्याय की हम लोगों की जो धारा है, शीर्षस्थ पदों पर लागू हो रही है और इस देश में अनहोनी हो रही है जो देश में लोग सोचते भी नहीं होंगे। बहुत लोगों का नाम सुनते थे अध्यक्ष पद के लिए, राष्ट्रपति के पद के लिए। पहले शीर्षस्थ पदों पर जो सामाजिक न्याय का आरोप हम लोगों पर गढ़ा जाता था मुलायम सिंह यादव और हम लोगों पर कि जात-पात फैलाते हैं, ये जात-पात नहीं है। लेकिन शीर्षस्थ पदों पर बैठने से ही देश के वंचितों का, गरीबों का, दलितों का, पिछड़ों का कायाकल्प होने वाला नहीं है। आगे बात होगी, चर्चा होगी। आज न्याय की कुर्सी पर आपको बैठाया गया है। जो स्पीकर हुआ करता है वह किसी दल का नहीं होता, यही कहा जाता है और सिद्धांततः स्वीकार भी किया गया है। आपके और हमारे पूर्व के अध्यक्ष सोमनाथ बाबू हमारे सामने उदाहरण हैं। जरूरत है कि इस देश में गरीबों को सच मायने में न्याय दिलाना है और बहुत सारे पिछड़े राज्य बिहार जैसे राज्य, उड़ीसा जैसे राज्य हैं जो आजादी के साठ साल तक नैगलैक्टेड रहे हैं, उन्हें इंसाफ मिले, विशेष दर्जा मिले, राज्य के मुख्य मंत्री नीतीश जी भी मांग कर रहे हैं और हम लोग जब बंटवारा हुआ था, आडवाणी उन दिनों में थे।

यह कहा गया था कि हम बिहार को तकलीफ नहीं होने देंगे, विशेष पैकेज देंगे। हम लोगों ने उस समय एक लाख सत्तासी हजार करोड़ का दावा एन.डी.ए. सरकार के सामने पेश किया था, लेकिन एक पैसा भी नहीं मिला। हम सब एवं बिहार के सब लोग साथ हैं, अन्य राज्यों के साथ भी हम लोग हैं। चूंकि यही सबसे बड़ी पंचायत है, इसलिए यहीं सवाल रखा जाएगा और मैं समझता हूं कि आपकी वाणी में जो मीठापन है, हम लोगों को इस स्वर में स्वर मिला कर डिबेट में बहस करने का मौका आप देंगी। सत्ता पक्ष और सभी लोगों से, नेता विरोधी दल और उनके दल

[श्री लालू प्रसाद]

से भी हम लोगों का अनुरोध है कि चाहे छोटा दल हो, जिसको जो मेंडेट मिला हो, सन् 1984 में भाजपा को दो सीटें मिली थीं, कांग्रेस पार्टी को तो इस समय उम्मीद भी नहीं थी। हम विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहते हैं, इस देश के मुसलमान भाइयों और अकलियतों के लोगों का, उनके सवालात, गरीबों के सवाल और रंगनाथ मिश्रा कमीशन की जो रिपोर्ट है, मुस्लिम भाइयों को सेवाओं में रिजर्वेशन देने का, इसमें आपको डट कर इंसाफ दिलाना पड़ेगा। इसमें हम लोग आपका पूरा सहयोग करेंगे।

बिहार की जनता और आपकी कांस्टीट्यूएंसी के विषय में आडवाणी जी ने जिक्र किया। सासाराम और बिहार, पूरे देश, सभी मंत्रालयों एवं सभी लोगों का आप ध्यान रखेंगी। आपको यहां बैठाया गया है, इसलिए मैं किसी के निराश होने की कोई गुंजाइश नहीं देखता हूं, लेकिन साहस आपको दिखाना पड़ेगा। छोटे दलों को यह नहीं कहा जाएगा कि आपके दल के लिए पांच मिनट का ही टाइम है। अगर यह बंदिश लगेगी तो मैं नहीं कहता हूं, कोई चेतावनी नहीं देता हूं कि झंझट अवश्यंभावी है।

आज का दिन खुशी मनाने का है। आपके सामने मैंने ठीक कहा कि सत्ता से, सत्ताधारी दल से आपकी विदाई हो गई और आप हम सभी के गार्जियन हो गए। इसमें आप इंसाफ करेंगी, मैं आपको व्यक्तिगत रूप से भी जानता हूं। हमारे सामने सोमनाथ बाबू उदाहरण हैं। बसुदेव आचार्य जी हमारे बीच में बैठे हुए हैं, न्युक्लियर डील में अध्यक्ष जी पर लाख वामपंथियों ने आंखें लाल कीं, लेकिन इन्होंने उनकी एक भी बात नहीं मानी और इस मामले में इंसाफ किया। ये सवाल आपके सामने भी आने वाले दिनों में आएंगे, जैसा उदाहरण सोमनाथ बाबू का है।...*(व्यवधान)* शरद भाई, बाद में भी मिलेंगे। आपने पहले ही मुलायम सिंह की बात सुन कर शुरू कर दिया।...*(व्यवधान)*

हम आपसे इंसाफ की अपेक्षा करते हैं।...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदया: ये बातें रिकार्ड में नहीं जाएंगी।

*(व्यवधान)**...

श्री लालू प्रसाद: अध्यक्ष महोदया, हमारी अपेक्षा है कि ज्यादा से ज्यादा बोलने का समय मिले, कंस्ट्रक्टिव सुझाव दिए जाएं और सब लोगों की बात सुनी जाए। हम लोग आपके प्रति फिर शुक्रगुजार हैं। आपको हम सब लोगों ने स्पीकर बनाया है। हम पुनः आपको बधाई देते हैं और अभिनन्दन करते हैं।

[अनुवाद]

***डा. रतन सिंह अजनाला (खंडूर साहिब):** माननीय अध्यक्ष महोदया, इस अवसर में अपनी ओर से तथा अपने दल शिरोमणि अकाली दल की ओर से आपको बधाई देता हूं। आपकी सफलता भारतीय लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत है। आप एक ऐसे महान नेता की सुपुत्री हैं जिन्होंने इस देश के लोगों की सेवा की। सदियों से दलित लोग अब प्रतिष्ठित स्थानों पदों पर आसीन हो चुके हैं। हमें आशा है कि आप इस सम्मानीय सभा के सभी वर्गों को समान अवसर और न्याय प्रदान करेंगी ताकि हम यहां आम आदमी से संबंधित मुद्दे उठा सकें।

सदियों से महिलाएं इस समाज में बराबरी का स्थान प्राप्त करने के लिए संघर्ष करती रही हैं। मुझे खुशी है कि स्वतंत्रता के 62 वर्ष के पश्चात अध्यक्ष पद को एक महिला सुशोभित कर रही हैं। इस अवसर पर मैं आपका सम्मान करता हूं। महोदया, सिख धर्म का समाज में महिलाओं को बराबरी का दर्जा देने में दृढ़ विश्वास है।

इस अवसर पर मैं पुनः एक बार अपनी ओर से तथा अपने दल शिरोमणि अकाली दल की ओर से आपको बधाई देता हूं।

रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री ई. अहमद): अध्यक्ष महोदया, इस सम्मानीय सभा के अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से चुने जाने पर मैं स्वयं अपनी ओर से तथा अपने दल मुस्लिम लीग की ओर से आपको बधाई देता हूं। जहां तक इस संसद का प्रश्न है, आपके चुनाव ने इतिहास बनाया है। मैं संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी को भी बधाई देता हूं जिन्होंने अध्यक्ष के पद हेतु उम्मीदवार के रूप में आपका चयन करके हिम्मत और विलक्षण बुद्धिमता का परिचय दिया।

महोदया, मैं आपको केवल अंग्रेजी की कहावत याद दिलाना चाहता हूं। इसके अनुसारः "जो हाथ पालना झुलाते

*कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

*मूलतः पंजाबी में दिए गए भाषण के अंग्रेजी अनुवाद का हिन्दी रूपांतर।

है वही संसार पर शासन करेंगे।" मुझे आशा है कि अध्यक्ष का पदभार ग्रहण करने के बाद आप उन्हीं हाथों से संसद को चलायेंगी।

महोदया, अब तक हमें अध्यक्ष के रूप में पिता का प्यार मिला है। अब सभा को अध्यक्ष के रूप में मां की ममता भी मिलेगी। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि आयु में आप यहां मौजूद अनेक वरिष्ठ सदस्यों से छोटी हैं। लेकिन अध्यक्ष के रूप में अब आप इस सभा पर ममता उडेलेंगी।

महोदया, मैं आपको आपके प्रख्यात पिता द्वारा दलितों, पिछड़े वर्गों और अल्पसंख्यकों की समस्याओं को सुलझाने में निभाई गई भूमिका का स्मरण कराना चाहता हूं। मुझे विश्वास है कि अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए सदैव आप इन वर्गों की समस्याओं का ध्यान रखेंगी।

महोदया, यह एक ऐतिहासिक क्षण है और मुझे इसमें भागीदार बनकर अत्यंत खुशी है। यह भारत के संविधान और संविधान निर्माताओं के प्रति महान योगदान है।

इन्हीं शब्दों के साथ, मैं एक बार पुनः आपका अभिनन्दन करता हूं और अपने दल की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन देता हूं।

[हिन्दी]

श्री शरीफुद्दीन शारिक (बारामूला): मोहतरमा स्पीकर साहिबा, मुझे यकीन है कि आज हिन्दुस्तान अपनी नई तारीख लिख रहा है। एक औरत जात को इस अजीम ओहदे पर बैठा कर हिन्दुस्तान की तमाम मांओं, बहनों और बेटियों का सम्मान किया जा रहा है। इसलिए मैं इस सारे हाउस को और इसमें बैठे रहनुमाओं को दिल की गहराइयों से मुबारकबाद पेश करता हूं। हमारे मुल्क की एक नई तारीख बन रही है कि इन्सानियत का वह हिस्सा, जिसे मर्दों का गुलाम समझा जा रहा था, जिसने मर्दों के सितम सह-सह करके सदियां गुजारी थीं, आज मुल्क जाग रहा है, मुल्क की तारीख जाग रही है और हम एक नई तारीख रकम कर रहे हैं।

इस मौके पर मैं इस सारे हाउस को, सारे हिन्दुस्तान को जिंदाबाद कहना चाहता हूं और दिल की गहराइयों से मुबारकबाद देना चाहता हूं। सरकारी पार्टी के साथ मोहतरमा सोनिया जी ने और हिज्बे इख्तलाफ के जिन मुअज्जिज रहनुमाओं ने इत्तिफाक राय से यह फैसला किया है, इससे हमारे लिए एक और मशाल रोशन हो गई है, हमारे मुल्क की तरक्की के लिए, हमारे मुल्क के इत्तेहाद के लिए, हमारे मुल्क के एक नये इतिहास के लिए एक जबरदस्त रास्ता खुल गया है और मुझे उम्मीद है कि इस देश के लिए, गरीब लोगों के लिए, दलितों के लिए, माइनोरिटीज के लिए, पिछड़े हुए लोगों के लिए, दूरदराज देहात में रहने वाले लोगों के लिए जो संजीदा मसायल हैं, उनकी भरपूर नुमाइंदगी होगी। चूंकि आपकी रगों में वह खून है, जो यह दर्द महसूस करता है, गरीब का दर्द महसूस करता है, कुचले हुए आदमी का दर्द महसूस करता है, पिछड़े हुए आदमी का दर्द महसूस करता है, इसलिए उम्मीद यह है कि यह हाउस उन मसायल को उठाएगा और फौरी बहस-मुबाहसे में न पड़कर सिर्फ उन मसायल को उठाएगा, जिससे देश के गरीब लोग अब एक नई जिंदगी की उम्मीद लेकर आगे बढ़ने की उम्मीद कर रहे हैं।

इसी के साथ मैं सारे हाउस को, सारे मुल्क को और सारे नेता लोगों को यहां बैठकर मुबारकबाद देता हूं और आपको दिल की गहराइयों से जम्मू-कश्मीर की अवाम की तरफ से, नेशनल कांफ्रेंस की तरफ से दिल की गहराइयों से मुबारकबाद देता हूं। मैं उम्मीद रखता हूं कि इस मुल्क की और इस सदन की सही रहनुमाई होगी और हम सही जानिब अपना कदम बढ़ाएंगे।

[अनुवाद]

श्री एच.डी. देवगौडा (हसन): आदरणीय अध्यक्ष महोदया, अध्यक्ष के सर्वोच्च पद पर आसीन होने पर आपको तहेदिल से बधाई देने में मैं स्वयं को सभी पूर्ववर्ती वक्ताओं के साथ संबद्ध करता हूं। महोदया, मुझे विश्वास है कि सत्ता पक्ष ने आपको अध्यक्ष के रूप में चुनने का जो निर्णय लिया है वह इस सम्मानीय सभा के इतिहास में बहुत समय तक याद किया जाएगा।

मैं उस दिन भी मौजूद था जिस दिन हम सभी ने पूर्ववर्ती अध्यक्ष, अति विद्वान व्यक्ति, श्री सोमनाथ चटर्जी को बधाई देने के लिए स्वयं को संबद्ध किया था। उस दिन मैंने संदेह व्यक्त किया था कि क्या वामपंथी और दक्षिणपंथी दोनों प्रकार के दल, जो अध्यक्षपीठ की दोनों ओर मौजूद थे, सहयोग करेंगे अथवा नहीं और यदि उन्होंने सहयोग किया तो ही सभा में गरिमा और शालीनता बनी रह सकेगी। उस दिन मैंने ये शब्द कहे थे। बाद में, गत पांच वर्ष के दौरान, जो कुछ हुआ उसका मैं प्रत्यक्षदर्शी रहा हूं।

[श्री एच.डी. देवगौडा]

आज, आपके सर्वोच्च पद पर आसीन होने पर सर्वप्रथम मैं सत्तारूढ़ दल को बधाई देता हूं कि उन्होंने अध्यक्ष के रूप में आपका चुनाव करके बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय लिया है क्योंकि आपके पास लंबा अनुभव है। मैं आपके पिता की विरासत का उद्धरण नहीं देना चाहता। मैं उनके साथ एक कम अवधि, ढाई वर्ष तक रहा। लेकिन आप स्वयं एक नौकरशाह, एक सांसद और वरिष्ठतम नेताओं में से एक होने के नाते लंबा अनुभव प्राप्त कर चुकी हैं। आपने यह अनुभव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करके प्राप्त किया है। मुझे उम्मीद और विश्वास है कि पन्द्रहवीं लोक सभा के सभी वर्गों के लोग एक सार्थक माहौल में, सार्थक वाद-विवाद के जरिए गरिमा और शालीनता स्थापित करेंगे ताकि हमने जो कुछ चौदहवीं लोक सभा में खोया है उसे पुनः प्राप्त किया जा सके और इस सभा के सम्मान की रक्षा हो सके।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से आपको तहेदिल से बधाई देता हूं।

[हिन्दी]

श्री असादूद्दीन ओवेसी (हैदराबाद): मोहतरमा, मैं आपको मेरी जमात की जानिब से, अपनी जानिब से मुबारकबाद पेश करता हूं। यकीनन हिंदुस्तान की जम्हूरियत का यह एक तारीखी दिन है कि एक खातून को इस जलीलुलकदर ओहदे पर फायज किया गया। जहां आपका इंतेखाब काबिले मुबारकबाद है, वहीं इस बात का पैगाम और सबूत भी देता है कि अगर सियासी जमातें चाहें, तो इस ऐवान में और दस्तूरी ओहदों पर उन लोगों को फायज किया जा सकता है, इस ऐवान में उन लोगों को लाया जा सकता है, जिनकी इस ऐवान में बहैसियत मजमूई तौर पर तनासुब बहुत कम है। मैं यहां पर कोई मुतानाजा बात नहीं करना चाहूंगा, बल्कि आपसे यही गुजारिश करना चाहूंगा कि अगर सियासी जमातें चाहेंगी, तो यकीनन चाहे दलित हो या मुसलमान हो, उनकी इस ऐवान में नुमाइंदगी में बेहद इजाफा हो सकता है, शर्त यह है कि सियासी जमातें इस बात को तय करें कि वे क्या करना चाहती हैं।

मोहतरमा, मैं साथ ही साथ आपसे यही अदबन गुजारिश करना चाहूंगा कि हम एक छोटी जमात के रुक्न जरूर हैं, मगर लाखों करोड़ों लोगों की उम्मीदें और उनके मसाइल की तर्जुमानी करने के लिए आवाम ने हमको मुंतखब करके यहां पर भेजा है। मैं उम्मीद करता हूं कि जो सदारत की कुर्सी पर फायज हैं, हमको ज्यादा मौका मिलेगा, आवाम के मसाइल को उठाने के लिए और साथ ही साथ मैं समझता हूं कि आज आपका इस ओहदे पर इंतेखाब होना, यह ऐवान बल्कि सारा मुल्क आपके मरहूम वालिद को खराजे अकीदत पेश कर रहा है कि उनकी कुर्बानियां, उनकी जद्दोजहद का नतीजा है कि आज मुल्क उन तमाम चीजों को मान रहा है और यकीनन मुस्तकबिल में भी मानता रहेगा।

मोहतरमा, मैं फिर से आपको अपनी जानिब से मुबारकबाद देता हूं और इस बात का तयक्कुन देता हूं कि इस ऐवान को चलाने के लिए हम आपका पूरा तआवुन करेंगे। यह एक ऐवान भी है और अखलाक का घर भी है। माजी में इस घर में अखलाक की धज्जियां उड़ा दी गयीं। हम उम्मीद करते हैं कि इस अखलाक के घर में दोबारा उसकी अजमत बहाल होगी, दोबारा पारलीमानी अकदार बहाल होगा। मैं आपको मुबारकबाद देता हूं और उम्मीद करता हूं कि आप छोटी जमातों को यहां पर मौका देंगी।

श्री इन्दर सिंह नामधारी (चतरा): मैडम स्पीकर, मैं आपको इस आसन पर बैठने के लिए मुबारकबाद देता हूं। मुझे पूरा यकीन है कि जो आपकी पृष्ठभूमि है, उसके अनुसार आप इस सदन का संचालन इस ढंग से करेंगी, जिसको इतिहास याद रखेगा।

महोदया, मैं इस सदन में पहली बार आया हूं और झारखंड जैसे उग्रवादी प्रदेश से एक निर्दलीय के रूप में जीतकर आया हूं। मैं देखता हूं कि सारे हिंदुस्तान की नजरें कैसे इस सदन की ओर रहती हैं। मैं झारखंड का स्पीकर रह चुका हूं। मैं 6 बार वहां विधायक रहा हूं। स्पीकर रहते हुए मैंने यह महसूस किया कि कैसे सारा हिंदुस्तान देखता है और सारी विधान सभायें देखती हैं कि पार्लियामेंट में क्या होता है।

मैडम, मुझे 25 नवम्बर, 2001 का वह दिन याद है जब इसी पार्लियामैंट हाउस में स्वर्गीय कृष्णकांत जी की अध्यक्षता में, माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी भी वहां मौजूद थे, देश के सारे मुख्यमंत्री, देश के सारे लीडर्स ऑफ ऑपोजिशन, देश के जितने भी चीफ व्हिप हैं, सब लोग यहां पर मौजूद थे और दो दिन की लम्बी बहस के बाद एक सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित किया गया था कि सदनों के संचालन के लिए कैसे कोड ऑफ कंडक्ट हो। लेकिन मैडम, मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि जब कान्फ्रैंस

करके, रैजोलूशन पास करके हम लोग अपने प्रदेशों में पहुंचे भी नहीं थे कि पार्लियामैंट में ही दूसरे दिन माननीय सदस्य फिर वैल में चले आए और ऐसा हंगामा हुआ कि वह रैजोलूशन धरा का धरा रह गया। इसीलिए सारे देश की विधान सभाएं पार्लियामैंट की ओर देखती हैं। लेकिन अगर पार्लियामैंट में ही अनुशासन की धज्जियां उड़ाई जाएंगी, तब जब रात है ऐसी मतवाली तो सुबह का आलम क्या होगा। जब पार्लियामैंट में ऐसे सीन और दृश्य होंगे तो विधान सभाओं में क्या होगा। इसलिए आज जरूरत है कि इस देश की सबसे बड़ी पंचायत की गरिमा को बनाए रखा जाए। हम इसके लिए पूरा प्रयास करेंगे और आपसे आग्रह करना चाहेंगे कि आप इस सदन का संचालन करने के लिए अपने विवेक से काम लेंगी जिससे यह सदन सुचारू रूप से चले। जब कोई व्यक्ति अपने मनोबल के साथ आगे बढ़ता है तो कहा गया है कि-

चहकने लगी जहां भी बुलबुल हुआ वहीं पर जमाल पैदा।
कमी नहीं है कद्रदां की अकबर करे तो कोई कमाल पैदा।

अखबारों ने आपको कोकिला की संज्ञा दी है, कोयल की संज्ञा दी है और मैंने यह शेर पढ़ा है कि-

चहकने लगी जहां भी बुलबुल हुआ वहीं पर जमाल पैदा।
कमी नहीं है कद्रदां की अकबर करे तो कोई कमाल पैदा।

मुझे पूरा विश्वास है कि आपकी मीठी बोली, क्योंकि कभी-कभी बीमारी हो तो थैरेपी बदलनी पड़ती है। पुरुषों को बहुत बार आजमाकर देख लिया। सोमनाथ दादा बहुत कड़े स्पीकर थे, अनुशासन फिर भी बहाल नहीं हुआ। इसलिए थैरेपी बदली गई है। मैं इसके लिए सत्तारूढ़ दल को बधाई देना चाहता हूं कि इन्होंने थैरेपी बदलने का एक प्रयोग किया और मुझे पूरा विश्वास है कि यह थैरेपी काम करेगी, सदन की गरिमा फिर से बहाल होगी और सारा हिन्दुस्तान उससे प्रकाशित होगा।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको बहुत-बहुत मुबारकबाद देता हूं।

डा. बलि राम (लालगंज): अध्यक्ष महोदया, मैं सबसे पहले सर्वसम्मत से अध्यक्ष पद पर चुने जाने पर अपनी तरफ से तथा बहुजन समाज पार्टी की तरफ से आपको लाख-लाख बधाई देता हूं। आपके अध्यक्ष चुने जाने पर पूरे देश के कमजोर तबके के लोग खुशियां मना रहे हैं और मुझे भी काफी प्रसन्नता है। साथ ही साथ मुझे गर्व भी है कि आज एक दलित की बेटी इस पार्लियामैंट की सबसे बड़ी कुर्सी पर विराजमान हुई हैं।

अध्यक्ष महोदया, आपसे, जो वीकर सैक्शन है, जो कमजोर तबके के लोग हैं, उन्हें बहुत बड़ी आशाएं हैं, बहुत बड़ी उम्मीदें हैं। अभी हमारे तमाम माननीय सदस्यों ने ओथ के समय संकल्प लिया था, प्रधान मंत्री जी ने भी संकल्प लिया था कि हमारा देश अब संविधान के मुताबिक चलेगा, संविधान को हम अक्षुण्ण बनाएंगे, उसकी अखंडता को कायम रखेंगे। संविधान के अंतर्गत कमजोर वर्ग, विशेषकर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़ी जाति को सामाजिक और आर्थिक रूप से मजबूत होने के लिए संविधान में कुछ अधिकार दिए गए हैं। अनुसूचित जाति, जनजाति को इस देश की सरकारी नौकरियों में, शिक्षा में साढ़े 22 प्रतिशत का आरक्षण दिया गया। उसी तरह से पिछड़ी जातियों को भी साढ़े 27 प्रतिशत का आरक्षण दिया गया। लेकिन आजादी के 60 साल बीतने के बाद भी आज तक वह आरक्षण पूरा नहीं हो पाया है। इसलिए हमें आपसे बहुत भरोसा है, बहुत उम्मीद है।

जब तेरहवीं लोक सभा गठित हुई थी, तब इस कुर्सी पर स्वर्गीय जी.एम.सी. बालयोगी जी विराजमान हुए थे। उस समय हमारी पार्टी की नेता बहन कुमारी मायावती जी ने कहा था कि मुझे इस बात का गर्व है कि दलित समाज का बेटा आज इस कुर्सी पर विराजमान हुआ है और उन्होंने अपील की थी कि हमारा जो रिजर्वेशन है, उसे नौवीं अनुसूची में डाला जाये। उस समय प्रधान मंत्री जी और स्पीकर साहब ने एक कमेटी गठित की थी, जिसमें दलित समाज के साथ-साथ हर समाज के तमाम व्यक्ति थे। उस समय तीन दिन का कन्वेंशन चला और सर्वसम्मत से यह पास हो गया कि आरक्षण को नौवीं अनुसूची में डाला जाये। भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने अपना कार्यकाल पूरा किया। यू.पी.ए. सरकार ने भी अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा किया, लेकिन उस रिपोर्ट का कहीं पता नहीं चला कि वह कहां गयी? वह रिपोर्ट लागू हुई या नहीं, यह भी पता नहीं लगा। इसलिए हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप सरकार पर दबाव देकर, जो संवैधानिक अधिकार इस देश के दबे-कुचले लोगों को मिला हुआ है, उसे दिलाने और आरक्षण को नौवीं अनुसूची में डालने का प्रयास करेंगी। इसी के साथ पुनः आपको लाख-लाख बधाइयां देते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदया: मैं क्षमा याचना करती हूं उन सम्मानित

[अध्यक्ष महोदया]

सदस्यों से, जिनकी सूची मेरे पास आई थी, लेकिन बोलने के लिए समय नहीं मिल पाया।

माननीय प्रधान मंत्री, सदन के माननीय नेता, विपक्ष के माननीय नेता, संप्रग की माननीया अध्यक्षा, सभा में दलों और ग्रुपों के माननीय नेता तथा माननीय सदस्यगण।

लोक सभा के अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से मुझे चुनने के लिए मैं आप सबकी हृदय से आभारी हूं। आज जो हुआ, वह अभूतपूर्व है। इस सदन ने 57 वर्ष के अपने सुदीर्घ जीवन में पहली बार एक महिला को अध्यक्ष पद पर आसीन कर एक नया इतिहास रचा है, एक उज्ज्वल कीर्तिमान स्थापित किया है। मेरे स्वर्गीय पिताजी के लिए अभी-अभी जो उद्‌गार सदन में विभिन्न दल के नेताओं ने व्यक्त किये हैं, मैं उससे अभिभूत हूं। अभिभूत हूं, उन सुन्दर वचनों से जो आपने मेरे लिए कहे हैं, ढूंढ़ने से भी कृतज्ञता ज्ञापन के लिए मुझे शब्द नहीं मिल रहे हैं। मैं अनुगृहीत हूं। आपने मुझे जो सम्मान दिया है, मैं विनम्रता के साथ उसे स्वीकार करती हूं।

मैं आप सभी को पन्द्रहवीं लोक सभा के लिए निर्वाचित होने पर हार्दिक बधाई देती हूं। राष्ट्र ने इस महानतम प्रतिनिधि संस्था को संसार की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक और विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के सौ करोड़ से भी अधिक लोगों के भाग्य निर्धारण का गंभीर उत्तरदायित्व सौंपा है और आपने इस महान प्रतिनिधि संस्था के अध्यक्ष का गंभीर उत्तरदायित्व मुझे सौंपा है। आपने मुझ पर जो अगाध विश्वास व्यक्त किया है, उससे मैं अपने आपको बहुत गौरवान्वित और विनीत महसूस कर रही हूं। अध्यक्ष चुने जाने के पश्चात् सदन के विभिन्न राजनीतिक सिद्धान्तों और उनकी सीमाओं से ऊपर उठकर भारतीय संविधान, नियमों और परंपराओं के मुताबिक सदन की सेवा मेरा परम कर्त्तव्य है। वस्तुतः यह भारत की सेवा है क्योंकि यह सदन भारत का एक लघु स्वरूप है।

माननीय सदस्यो, जब मैं स्कूल की छात्रा थी तो मैंने कई बार दर्शक दीर्घा से देखा कि किस प्रकार हमारे स्वतंत्रता संग्राम के अजेय पुरोधा इस सदन में बैठकर देश के लोगों के हित में फैसले लेते थे, खासकर उनके हित में जो शोषित हैं, वंचित हैं, कमजोर हैं और हाशिए पर हैं। ये वे नेता थे, जिनमें देश के लिए सब कुछ कुर्बान कर देने का जज्बा था, जिन्होंने इस सदन में निष्ठा और अनुशासन की उच्च परम्पराओं की नींव रखी थी। वर्ष 1985 में जब मैं पहली बार इस सदन की सदस्य निर्वाचित होकर आई, मैं पीछे की बैंच पर बैठा करती थी। वहां बैठने का अपना आनंद है। वहां से सदन का विहंगम दृश्य देखने को मिल जाता है और हम किसी को नहीं दिखाई देते। उस समय अनेक विद्वान, प्रखर वक्ता सदन को सुशोभित करते थे, जिन्हें मैं बड़े ध्यान से सुना करती थी।

माननीय सदस्यो, मेरी यह दृढ़ प्रतिज्ञा है कि मैं् इस सभा की गरिमा और सदस्यों का सम्मान बनाए रखने में कोई कमी नहीं आने दूंगी। मैं इस सदन के यशस्वी पूर्व अध्यक्षों, श्री गणेश वासुदेव मावलंकर से लेकर श्री सोमनाथ चटर्जी तक, के आदर्शों से परिचित हूं जिन्होंने सभा की महान परिपाटियों का परिपालन किया। उन्होंने अध्यक्ष पद को गरिमा प्रदान की जिससे सभी की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। इस संसद की इस बहुमूल्य विरासत को और समृद्ध करने के लिए मैं नई पहल और बेहतर पद्धतियों की खोज जारी रखूंगी।

लोक सभा का सीधा सम्बन्ध देश की धड़कन से है। महात्मा गांधी ने कहा था कि शक्ति जनता में निहित है और वह उसे कुछ समय के लिए उन्हें प्रदान करती है जिन्हें वह अपना प्रतिनिधि चुनती है। जनता से अलग होकर सांसदों की कोई शक्ति या अस्तित्व नहीं रहता है। हमें इस बात की सही समझ होनी चाहिए कि हमारे मतदाता हमसे क्या चाहते हैं। वे चाहते हैं कि हम सभा में उनके सरोकारों, चिन्ताओं और आशंकाओं को प्रभावशाली ढंग से रखें और आवश्यकतानुसार कानून बनाएं। अतः हम चर्चा और वाद-विवाद करें, आवश्यक हो तो असहमति भी व्यक्त करें, परन्तु शालीन तरीके से और सभा की कार्यवाही में बाधा डाले बिना। सभा में कुछ वर्ग समझते हैं कि सभा में असहमति को असरदार बनाने के लिए सभा की कार्यवाही को रोक देना आवश्यक है। कोई भी देशवासी कभी यह नहीं चाहेगा कि उसकी समस्या को सभा में रखने के लिए संसद के कामकाज को ठप्प कर दिया जाए। दरअसल, माननीय सदस्यों को जनहित की समस्याओं और चिन्ताओं को सदन में प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न तरीके सुलभ हैं। यदि हम इन तरीकों का प्रभावशाली ढंग से उपयोग करें तो हम इस सदन को विचार-विमर्श का सार्थक मंच बना सकते हैं।

खंडित जनादेश और त्रिशंकु लोक सभा की अटकलों

के बावजूद जनता ने स्थिरता और अच्छे शासन के पक्ष में स्पष्ट जनादेश दिया है। हम जिस वेस्टमिंस्टर प्रणाली का अनुसरण करते आए हैं, उसमें कार्यपालिका संसद की ही एक प्रशाखा है और हर समय उसके प्रति जवाबदेह है। सदस्यों की कुशलता इसमें हैं कि वे संसद या कार्यपालिका के कामकाज को बाधित किए बिना कार्यपालिका को सदैव सजग रखने में कितने सक्षम हैं। बाधा डालने से सरकार के काम और भूल-चूक की संसदीय समीक्षा नहीं हो पाती है और लोकतंत्र का सिद्धांत यह मांग करता है कि ऐसा न हो।

जनता हमसे अच्छा शासन चाहती है। चाहे हम सत्ता पक्ष के हों या विपक्ष के, हमें उन्हें अच्छा शासन देना ही होगा। भारतीय संसदीय लोकतंत्र के प्रमुख निर्माता पं. जवाहर लाल नेहरू से हमें प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए, जिनके अनुसार लोकतंत्र का अर्थ है, जो हमारे साथ सहमत हो या न हो, उनके प्रति सहिष्णुता और सम्मान का भाव रखना। दुनिया के दूसरे सबसे बड़ी आबादी वाले देश में अच्छा शासन सुनिश्चित करने में सदन के सभी सदस्यों का रचनात्मक सहयोग जरूरी है। हमारी जनता आपकी ओर बड़ी आशा से देख रही है और मुझे विश्वास है कि उनकी जीवन-स्थितियों को बेहतर बनाने में आप कोई कसर उठा नहीं रखेंगे।

ऐसा माना जाता है कि संसद सदस्य सभा में अपने निर्वाचन क्षेत्र, अपने दल और निःसंदेह अपनी आत्म-चेतना के प्रतिनिधि होते हैं, पर महत्वपूर्ण बात तो यह है कि संविधान के नाम पर शपथ लेने के कारण हम संपूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो देश की एकता, संप्रभुता और अखंडता का उत्कृष्ट उदाहरण है। संभव है कि आपकी सदस्यता के दौरान ये विभिन्न भूमिकाएं एक दूसरे से टकराएं। ऐसी स्थिति में संविधान के प्रति अपनी वचनबद्धता को हमें अपने अन्य कर्त्तव्यों से ऊपर रखना होगा। सभा तभी सुव्यवस्थित रूप से कार्य कर सकती है। एक परिपक्व सांसद वह है जो ऐसे ऊहापोह या धर्मसंकट को अपनी समझ, ज्ञान और कुशाग्र बुद्धि से हल कर सके। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे बीच ऐसे सांसदों की कमी नहीं है।

माननीय सदस्य आप सब जानते हैं कि इस चुनाव में एक विशेष बात सामने आई है। भारी संख्या में युवाओं ने अपने मतों की कीमत पहचानी और मतदान केन्द्रों पर उमड़ पड़े। हमें युवा भारत की आकांक्षाओं को पूरा करने के काम को प्राथमिकता देनी होगी। क्योंकि स्वभावतः युवा अधीर होते हैं, जोकि होना भी चाहिए, इसलिए यह काम जल्दी करना होगा। उन्हें एहसास कराना होगा कि हम उनकी इच्छा-आकांक्षाओं के प्रति सजग सचेत हैं और इस दिशा में हमारे प्रयास केंद्रित होंगे। हमें हार्दिक प्रसन्नता है कि हमारे बीच 302 नवनिर्वाचित सदस्यों में युवा सांसदों ने अपनी उल्लेखनीय उपस्थिति दर्ज की है। हमें उनका उत्साहवर्धन करना चाहिए, ताकि वे आगे देश को सबल नेतृत्व दे सकें। हमारे बीच कई समृद्ध सांसदिक अनुभव और विशिष्ट राजनीतिक पृष्ठभूमि के तपे-तपाए सांसद भी हैं। मैं उनसे निवेदन करना चाहती हूं कि वे नवनिर्वाचित सांसदों को सांसदिक परम्पराओं और लोकतांत्रिक आचरण से अवगत कराने पर विशेष ध्यान दें। मैं यह भी चाहूंगी कि सभी सम्मानित सदस्य नियमित रूप से इस सदन में उपस्थित रहा करें।

मेरे लिए यह विशेष हर्ष का विषय है कि मुझे जिस लोक सभा की अध्यक्षता का गौरव प्राप्त हुआ है, उसमें 58 महिला सांसद हैं, जो अब तक की सबसे बड़ी संख्या है। इससे यह उजागर हो गया है कि भारतीय नारी सामाजिक जकड़नों से अपनी मुक्ति और प्रगति के समान अवसरों के लिए अब और प्रतीक्षा नहीं कर सकती। दो वर्ष पूर्व प्रथम महिला राष्ट्रपति चुन कर हमने देश के गांव-गांव तक और अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में एक शुभ संदेश भेजा। आज लोक सभा की पहली महिला अध्यक्षा चुन कर हमने अपना मन्तव्य पुनः स्पष्ट कर दिया है कि हम केवल नारी सशक्तिकरण का समर्थन ही नहीं करते, बल्कि कठोर धरातल पर उसे लागू करने के लिए कृतसंकल्प हैं। मेरी प्रबल कामना है कि हम क्रम को आगे बढ़ाते हुए, यह सदन महिलाओं के सशक्तिकरण सम्बन्धी सभी मामलों में अब से एकमत होगा।

माननीय सदस्यगण, अब वह समय आ गया है, जब हम चुनाव के मैदान की गर्मी और धूल-धक्कड़ को भूल कर राष्ट्र के सम्मुख प्रस्तुत सामाजिक और आर्थिक मामलों के समाधान का प्रयत्न करें। विश्व अभूतपूर्व वित्तीय मंदी के दौर से गुजर रहा है। जाहिर है कि यह संकट विश्वजनीन है - और हमारा देश इन संकटों से अछूता नहीं है। सवाल यह है कि इस वैश्विक मंदी के बावजूद हम किस प्रकार देश की प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। यह हमारी राष्ट्रीय चिंताओं का विषय होना चाहिए, ताकि हम इन समस्याओं के समाधान के लिए एकमत होकर प्रयत्न कर

[अध्यक्ष महोदया]

सकें। यह वक्त का तकाजा है कि हम दलगत सीमाओं और परिप्रेक्ष्य से ऊपर उठकर राष्ट्रीय दृष्टिकोण अपनाएं।

विगत् छः दशकों से अधिक समय से यूं तो हमने बहुत अच्छी प्रगति की है, पर आप सब सहमत होंगे कि इस दिशा में और बहुत कुछ करना शेष है, ताकि धर्म, जाति, ऊंच-नीच के भेद-भाव से रहित समाज की स्थापना की जा सके। आज जो आजादी हमें हासिल है, उसे हम वास्तविक आजादी नहीं कह सकते, क्योंकि वह मात्र राजनीतिक आजादी है। बहुत से लोगों के लिए, जिनमें अधिकांश अनुसूचित जाति, जनजाति, अल्पसंख्यक और पिछड़े वर्ग के हैं, इसका कोई अर्थ नहीं है, जब तक हम उनके जीवन-स्तर को ऊंचा न उठा सकें, गरीबी की समस्याओं का समाधान न कर सकें, उन्हें भोजन, वस्त्र और मकान मुहैया न करा सकें और सभी तरह के शोषण, अन्याय और उत्पीड़न से उन्हें मुक्त न कर सकें, उन्हें चतुर्दिक विकास के समान अवसर प्रदान न कर सकें, तब तक उनके लिए यह स्वतंत्रता बेमानी है। इस सामाजिक लक्ष्य को सभी दृष्टियों से पूरा करना है। देश की जनता की सेवा का यह अभूतपूर्व अवसर है और राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को बखूबी निभाने के संतोष से बढ़कर और कोई पुरस्कार नहीं हो सकता। भारत की जनता ने हममें से प्रत्येक को चुनकर इस लोक सभा में इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही भेजा है।

माननीय सदस्यों, सदन को सुचारू रूप से चलाने में आपकी भागीदारी अनिवार्य है। इसलिए सभी वरिष्ठ और नये सांसदों से मेरा निवेदन है कि सदन की गौरवमयी परम्पराओं के अनुसार मुझे अपना सहयोग देने की कृपा करें, ताकि मैं अपने संवैधानिक दायित्वों को पूरा कर सकूं, जिन्हें आपने मुझे सौंपा है। मैं आश्वस्त करना चाहती हूं कि सदन के सभी वर्गों पर मेरा पूरा ध्यान होगा। मैं यह भी आश्वस्त करना चाहती हूं कि न विरोध-पक्ष के प्रति कोई पक्षपात् करूंगी और न ही सत्तापक्ष को शिकायत का मौका दूंगी।

मीडिया संसदीय प्रणाली का एक सुदृढ़ स्तम्भ है, जो न केवल सूचना के प्रसारण की दिशा में, बल्कि राजनीतिक चेतना जगाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अगर संसद की कार्यवाही में व्यवधान पड़ता है तो मीडिया निश्चय ही ऐसी घटनाओं के समाचार जनता तक पहुंचाये, पर मैं मीडिया से अनुरोध करूंगी कि वे माननीय सांसदों के द्वारा किये गये अच्छे काम को भी प्रकाश में लायें।

सभा द्वारा मेरे प्रति दिखाई गई सद्भावना से मैं कृतकृत्य हूं। मैं माननीय प्रधानमंत्री, सदन के माननीय नेता, विपक्ष के माननीय नेता, संप्रग की माननीय नेता, समूहों तथा दलों के माननीय नेताओं और सभी माननीय सदस्यों द्वारा की गई सराहना और समर्थन के लिए उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करती हूं।

मैं इस अवसर पर सामयिक अध्यक्ष श्री माणिकराव गावित जी को पिछले तीन दिनों में अत्यन्त गरिमा और सुचारू रूप से सदन का संचालन करने के लिए धन्यवाद देती हूं।

लोक सभा सचिवालय एक अत्यन्त दक्ष संगठन के रूप में जाना जाता है और कठिन परिस्थितियों में भी कर्त्तव्यनिष्ठा के लिए विख्यात है। मुझे विश्वास है कि सदन के सुचारू संचालन के लिए मुझे सचिवालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

अंत में मैं यही कहूंगी कि यह सदन साधारण नहीं है, यह सदन पावन है, यह सदन दिव्य है क्योंकि इस सदन में हम अपने महान जनतंत्र की उपासना करते हैं। आइए, हम सब मनसा, वाचा, कर्मणा अपने आपको भारत के जनतंत्र, भारत की आत्मा के लिए अर्पित कर दें।

अपराह्न 12.51 बजे

प्रधानमंत्री और सभा के नेता का परिचय

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदया: माननीय सदस्यगण, मुझे माननीय प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह का इस सभा से परिचय कराते हुए बहुत खुशी हो रही है। हम उनको अपनी शुभ कामनाएं देते हैं तथा उनको उनके कार्य में सफलता की कामना करते हैं।

इसके साथ ही मुझे श्री प्रणब मुखर्जी का इस सभा के नेता के रूप में परिचय कराते हुए खुशी हो रही है।

अपराह्न 12.51½ बजे

विपक्ष के नेता का परिचय

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदया: मुझे इस सभा से श्री लाल कृष्ण आडवाणी का विपक्ष के नेता के रूप में परिचय कराते हुए बहुत खुशी हो रही है।

अपराह्न 12.52 बजे

मंत्रियों का परिचय

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदया: माननीय प्रधान मंत्री कृपया अब मंत्रिपरिषद के सदस्यों का परिचय कराएं।

प्रधान मंत्री (डा. मनमोहन सिंह): महोदया, आपकी अनुमति से मैं आपसे तथा आपके माध्यम से इस सम्माननीय सभा से मंत्रिपरिषद के सदस्यों का परिचय कराना चाहता हूं।

कैबिनेट मंत्री

श्री प्रणब मुखर्जी	वित्त मंत्री
श्री शरद पवार	कृषि मंत्री तथा उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री
श्री ए.के. एंटनी	रक्षा मंत्री
श्री पी. चिदम्बरम	गृह मंत्री
कुमारी ममता बनर्जी	रेल मंत्री
श्री एस.एम. कृष्णा	विदेश मंत्री
श्री वीरभद्र सिंह	इस्पात मंत्री
श्री विलासराव देशमुख	भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्री
श्री गुलाम नबी आजाद	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री
श्री सुशीलकुमार शिन्दे	विद्युत मंत्री
श्री एम. वीरप्पा मोइली	विधि और न्याय मंत्री
डा. फारूख अब्दुल्ला	नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री
श्री एस. जयपाल रेड्डी	शहरी विकास मंत्री
श्री कमल नाथ	सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री
श्री वायालार रवि	प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री
श्री मुरली देवरा	पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री
श्रीमती अम्बिका सोनी	सूचना और प्रसारण मंत्री
श्री मल्लिकार्जुन खरगे	श्रम और रोजगार मंत्री
श्री कपिल सिब्बल	मानव संसाधन विकास मंत्री

[अध्यक्ष महोदया]

श्री बी.के. हान्डिक	खान मंत्री तथा उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री
श्री आनन्द शर्मा	वाणिज्य और उद्योग मंत्री
श्री सी.पी. जोशी	ग्रामीण विकास मंत्री तथा पंचायती राज मंत्री
कुमारी सैलजा	आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्री तथा पर्यटन मंत्री
श्री सुबोध कांत सहाय	खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री
डा. एम.एस. गिल	युवक कार्यक्रम और खेल मंत्री
श्री जी.के. वासन	पोत परिवहन मंत्री

अपराह्न 1.00 बजे

श्री पवन कुमार बंसल	संसदीय कार्य मंत्री
श्री मुकुल वासनिक	सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री
श्री कांतिलाल भूरिया	जनजातीय कार्य मंत्री

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

श्री प्रफुल पटेल	नागर विमानन मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री पृथ्वीराज चव्हाण	विज्ञान और प्रौद्यौगिकी मंत्रालय के राज्य मंत्री; पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के राज्य मंत्री; प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री; कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री श्रीप्रकाश जायसवाल	कोयला मंत्रालय के राज्य मंत्री और सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री सलमान खुर्शीद	कॉरपोरेट कार्य मंत्रालय के राज्य मंत्री और अल्पसंख्यक मामले मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री दिन्शा जे. पटेल	सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्यम मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्रीमती कृष्णा तीरथ	महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की राज्य मंत्री
श्री जयराम रमेश	पर्यावरण और वन मंत्रालय के राज्य मंत्री

राज्य मंत्री

श्री श्रीकांत जेना	रसायन और उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री ई. अहमद	रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री

श्री मुल्लापल्ली रामचन्द्रन	गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री वी. नारायणसामी	योजना मंत्रालय में राज्य मंत्री और संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया	वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्रीमती डी. पुरन्देश्वरी	मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री के.एच. मुनियप्पा	रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री अजय माकन	गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्रीमती पनबाका लक्ष्मी	वस्त्र मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री नमो नारायन मीणा	वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री एम.एम. पल्लम राजू	रक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री सौगत राय	शहरी विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री जितिन प्रसाद	पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री ए. साई प्रताप	इस्पात मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्रीमती परनीत कौर	विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री गुरूदास कामत	संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री हरीश रावत	श्रम और रोजगार मंत्रालय में राज्य मंत्री
प्रो. के.वी. थॉमस	कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री भरतसिंह सोलंकी	विद्युत मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री महादेव एस. खंडेला	सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री दिनेश त्रिवेदी	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री शिशिर अधिकारी	ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री सुल्तान अहमद	पर्यटन मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री मुकुल राय	पोत परिवहन मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री चौधरी मोहन जतुआ	सूचना और प्रसारण मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री तुषारभाई चौधरी	जनजातीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री सचिन पायलट	संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री अरुण यादव	युवक कार्यक्रम और खेल मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री प्रतीक पाटील	भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री आर.पी.एन. सिंह	सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय में राज्य मंत्री

[अध्यक्ष महोदया]

श्री शशी थरूर	विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री विन्सेंट एच. पाला	जल संसाधन मंत्रालय में राज्य मंत्री
श्री प्रदीप जैन	ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री
कुमारी अगाथा संगमा	ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री

डा. मनमोहन सिंह: महोदया, डी.एम.के. के हमारे सहयोगी डा. करुणानिधि के जन्मदिवस समारोह के कारण चेन्नई में है। मैं उनका परिचय अलग से बाद में कराऊंगा।

अध्यक्ष महोदया: सभा कल 4 जून, 2009 को राष्ट्रपति के अभिभाषण के समापन के आधे घंटे के बाद समवेत होने के लिए स्थगित होती है।

अपराह्न 1.06 बजे

तत्पश्चात लोक सभा गुरूवार, 4 जून, 2009/14 ज्येष्ठ,1931 (शक) को राष्ट्रपति के अभिभाषण के आधे घंटे के बाद तक के लिए स्थगित हुई।